ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

वैशाख २०८१ मई २०२४

₹ ३०

गीत

दिन गरमी वाले

– रामानुज त्रिपाठी

दिन में मक्खी, रात में मच्छर
पड़े हुए हैं पहरा डाले
आये हैं दिन गरमी वाले।

ऊनी कपड़े धुलवा कर अब
अगले जाड़े तक फिर से सब
बंद हो गये संदूकों में
लटक रहे हैं जिनमें ताले
आये हैं दिन गरमी वाले।

गर्म हवा के चंचल झोंके
खिड़की दरवाजों से हो के
कमरे में आकर धीरे से
चुभो रहे हैं तन में भाले
आये हैं दिन गरमी वाले।

कूलर–पंखें डोल–डोलकर
सन–सन–सन–सन बोल–बोलकर
ठंडी–ठंडी हवा दे रहे
जिम्मेदारी खूब संभाले
आये हैं दिन गरमी वाले।

पशु–पक्षी गरमी के मारे
कितने आकुल हैं बेचारे
प्यासे–प्यासे भटक रहे हैं
हाँफ–हाँफ कर जीभ निकाले
आये हैं दिन गरमी वाले।

– गरयें, सुलतानपुर (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

वैशाख २०८१ ▪ वर्ष ४४
मई २०२४ ▪ अंक ११

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

क्या आपने ऐसी मोटरगाड़ी को देखा है जो चल तो नहीं रही है लेकिन उसका इंजन चालू है। इंजन चालू है मतलब डीजल-पेट्रोल जल रहा है। क्या यह स्थिति हमारे जीवन की भी किसी अवसर से मिलती-जुलती है? प्रश्न जरा कठिन है, इसलिए मैं ही सहायता करता हूँ। इन दिनों आप सब छुट्टियाँ मना रहे होंगे। इन छुट्टियों का समय जो बच्चे 'कुछ न करके' बिता रहे हैं वे इस न चल रही, पर डीजल-पेट्रोल खा रही गाड़ी जैसे ही हैं। क्योंकि छुट्टी का समय भी हमारे जीवन का ही वह कालखण्ड है जो बाकी जीवन के समान ही कीमती है। इस समय को भी पुन: प्राप्त भी करना असंभव है यानि 'जो गया, सो गया, फिर हाथ नहीं आएगा।' ईश्वर भी हमें नया जन्म तो दे सकते हैं पर इस जन्म में हमसे खो चुका समय नहीं लौटा सकते हैं।

मैंने अपने बचपन में अपने हिन्दी के अध्यापक जी से एक रोचक बात सुनी थी वही आपको भी बताता हूँ। वे कहते थे- ''समय एक ऐसे व्यक्ति के जैसा है जिसकी गति किसी से नहीं थमती अर्थात् उसे कोई रोक नहीं सकता, उसके सिर के अगले भाग पर बाल है पर पीछे से गंजा है। इसलिए कोई उसे आते हुए ही सतर्कता से पकड़ ले तो उसकी पीठ पर सवार होकर उसके साथ चल सकता है, वह एक बार सामने से गुजर जाए तो फिर पीछे से गंजा होने से किसी के हाथ नहीं आ सकता।''

निश्चित रूप से बच्चों को समय का महत्व बताने के लिए यह एक रोचक कल्पना है। लेकिन यदि हम छुट्टियों में छुट्टी की छुट्टी न कर सके तो बहुत घाटे में रहेंगे। वर्षभर चलने वाली नियमित पढ़ाई से विराम का अर्थ है इस समय का उपयोग कुछ अलग सीखने का समय। छुट्टी अभिरुचियों (Hobby) को अधिक समय देकर निखारने का यह सुनहरा अवसर होता है। समय को सोना बनाना है तो अनावश्यक सोने में खोने से बचना होगा।

छुट्टियाँ आपको नई ऊर्जा, नए अनुभवों और नई कुशलता से भर देंगी यदि आपने छुट्टी को 'फालतू-समय' न समझा। व्यस्त रहिए, मस्त रहिए और छुट्टी को सार्थक बनाइए। मेरी शुभकामनाएँ।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- मकड़जाल -डॉ. फकीरचन्द शुक्ला १६
- लू के थपेड़े -उषा सोनी २४
- मेहनत का फल -तारादत्त जोशी ४२

छोटी कहानी

- शांति -डॉ. उमेशचन्द्र नैथानी ०५
- नई सहेलियाँ -टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला' ०७
- सफेद परी -टीकमचन्दर ढोडरिया ३६

लोककथा

- गप्पू और ढोल -पवन चौहान ३०

लघुकथा

- नीली चिड़िया -डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' २३

प्रसंग

- कबीर का लोटा -संजीव कुमार 'आलोक' १८
- सुनहरी निब वाला..... -डॉ. हनुमान प्रसाद 'उत्तम' २२

आलेख

- पुण्यश्लोका राजमाता..... -उमेश कुमार नीमा १०
- सौन्दर्य की रानी है पचमढ़ी -डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव १४
- योद्धा महर्षि परशुराम -सुशील 'सरित' ४५

कविता

- दिन गरमी वाले -रामानुज त्रिपाठी ०२
- सिद्धार्थ से गौतम बुद्ध -लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ०९
- सावरकर थे बड़े महान -डॉ. राकेश चक्र ३४
- भीषण गर्मी के दिन आए -आचार्य भगवत् दुबे ४९

स्तंभ

- छः अँगुल मुस्कान - ०८
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी १३
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २०
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' २६
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान - ३७
- घर का वैद्य -उषा भण्डारी ३८
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ४०
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ४१
- आपकी पाती - ४६
- पुस्तक परिचय - ४८
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

बौद्धिक क्रीडा

- बाल पहेलियाँ -प्रवीण कुमार ०६
- आओ हँस लें - १२

चित्रकथा

- विचित्र स्थिति -देवांशु वत्स १९
- फिर वहीं -संकेत गोस्वामी ३३
- नकल से सावधान -देवांशु वत्स ३५

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **"मन्दसौर संजीत मार्ग SSM"** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

शांति

– डॉ. उमेशचन्द्र नैथानी

हर्षिल वन में राजा शेर सिंह ने एक आपातकालीन बैठक बुलायी जिसमें जंगल के सभी पशु–पक्षियों को उपस्थित होने के लिये आदेश हुआ। दो दिन बाद बैठक में सभी पशु–पक्षी उपस्थित होने पर आशंकित थे कि महाराज ने बैठक क्यों बुलायी होगी ? जब सभी पशु–पक्षी उपस्थित हो गये तो राजा शेर सिंह बोले– ''मेरे जंगल के सभी निवासियों आज मुझे आप सभी से एक गम्भीर विषय पर चर्चा करनी है, आप सभी के विचार आमंत्रित हैं।''

मीकू तोते ने कहा– ''महाराज! क्या कार्यवाही शुरू करूँ ?''

''हाँ भीकू!'' राजा शेर सिंह बोले।

भीकू– ''हमारे जंगल के सभी सम्मानित सदस्यो! महाराज पिछले वर्ष जंगल में लगी आग से आज भी चिन्तित हैं। महाराज चाहते हैं कि जो पेड़–पौधे जलकर राख हो गये थे उनकी जगह जंगल का प्रत्येक पशु–पक्षी एक–एक पौधा लगायेगा तो हमारा जंगल फिर से हरा–भरा हो जायेगा।''

टीनू भालू बोला– ''महाराज! आप आज्ञा दें तो एक सुझाव दूँ।'' ''हाँ टीनू!'' महाराज बोले।

टीनू बोला, ''महाराज! इस वर्ष जंगल में केवल फलदार वृक्ष ही लगायेंगे तो अच्छा रहेगा।''

महाराज– ''ऐसा क्यों ?''

टीनू– ''अब इंसानों की बस्ती से हमें भगा दिया जाता है। जंगल में फलदार पेड़ रहेंगे तो हमें जंगल में ही अपना भोजन मिल जायेगा और हमें कोई खतरा भी नहीं रहेगा।''

सभी पशु–पक्षियों ने एक स्वर में बोला– ''महाराज! टीनू ठीक कह रहा है।''

महाराज– ''ठीक है, ऐसा ही होगा। तीन दिन

बाद सभी पशु-पक्षी एक-एक फलदार वृक्ष लायेंगे और कल सभी उनके लिये एक-एक गड्ढा खोद देंगे।''

तीन दिन बाद सभी पशु-पक्षी एक-एक पौधा लेकर आ गये। उन्हें देखकर राजा शेर सिंह बोले- ''हाँ केनी कोयल! तुम किस चीज का पौधा लायी हो?''

केनी- ''महाराज' अँगूर का।''

महाराज- ''और तुम जैमी लोमड़ी?

जैमी- ''महाराज! आम का।''

महाराज बोले- ''अब एक-एक कर अपने लाये हुये पौधों का नाम बताओ।

काकू कौआ- ''महाराज! पपीते का।''

बीनू बाज बोला- ''महाराज! लीची का।''

लोमी लोमड़ी- ''महाराज! कटहल का।''

गीनू गीदड़- ''महाराज! संतरे का।''

टीनू भालू- ''महाराज! आड़ू का।''

इस तरह सभी पशु-पक्षी एक-एक कर अपने लाये हुये फलदार पौधों का नाम ले रहे थे। तभी राजा शेर सिंह की दृष्टि हिना हिरणी पर पड़ी।

महाराज- ''हिना तुम इतनी सहमी-सी क्यों हो? बोलो किस फल का पौधा लायी हो?''

हिना ने डरते-डरते कहा- ''महाराज! मैं नीम का पौधा लायी हूँ।''

हिना के इतना कहने पर सभी पशु-पक्षी उसका मजाक उड़ाने लगे। और कह रहे थे- ''हिना को नीम फलदार लग रहा है। बेवकूफ है।''

महाराज ने जब यह सुना तो जोर से चिल्लाये- ''शांत हो जाओ, हिना ने अच्छा किया।''

सभी पशु-पक्षी एक स्वर में बोले- ''वह कैसे?''

महाराज! ''मेरे जंगल के निवासियों हर पौधा 'फल' दे यह आवश्यक नहीं है। किसी की 'छाया' भी बड़ा 'आनंद' देती है। इस तरह जंगल में पौधारोपण कार्य सम्पन्न हो गया।

- देहरादून (उत्तराखण्ड)

पहेलियाँ

बाल पहेलियाँ

- प्रवीण कुमार

१) सफेद-सफेद खेत में, काले-काले चने।
हाथों से बोए, आँखों से चुने।।

२) सफेद मैदान में दौड़ता हूँ, जहाँ दौड़ूँ वहाँ काला कर दूँ।
पढ़े-लिखों के आता काम, बहुत नहीं है मेरा दाम।।

३) कॉपी-किताब मुझमें समाए, बच्चे मुझे पीठ पर लटकाए।
ढाई-अक्षर का नाम मेरा, बोलो क्या कहलाए।

४) सही गलत का ज्ञान कराते, पढ़ा-लिखाकर काबिल बनाते।
तुम बच्चों के मार्गदर्शक हैं, बोलो जरा ये क्या कहलाते।।

५) प्रथम कटे तो वात बने ये, अंत कटे तो दवा बने।
स्याही मुझमें भरते हैं, बोलो क्या कहलाए।।

६) ऊपर मेरे गत्ता, अंदर कोरे कागज।
लिखने के काम हूँ आती, बोलो क्या कहलाती।।

७) एकबार जो खरीद लो, हरदम साथ निभाए।
लिख कुछ नहीं सकते, पर पढ़ने के काम आए।।

८) अंत कटे तो रब बन जाऊँ, प्रथम कटे तो बड़ हो जाऊँ।
पेंसिल की गलतियाँ मिटाऊँ, सफेद हूँ मैं क्या कहलाऊँ।।

९) अज्ञानी बन इसमें जाते, विद्वान बनकर हैं आते।
विद्या का मंदिर है ये, बताओ क्या ये कहलाते।।

१०) जिसके पास ये हो, वो बहुत आदर पाए।
जिसके पास नहीं हो, अनपढ़ वो कहलाए।।

- रेवाड़ी (हरियाणा)

उत्तर इसी अंक में कहीं

नई सहेलियाँ

– टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

गर्मी का मौसम था। विद्यालयों की छुट्टियाँ हो चुकी थी। प्रिया का भी शाला जाना बंद हो गया था। कक्षा तीसरी की प्रिया बहुत सुंदर थी। गोरा रंग। गोल–मटोल चेहरा। फुंडा–फुंडा गाल। सुंदर नुकीली सूआनाक। लम्बे–घने बाल। यानी दिखने में बहुत सुंदर तो थी ही; पढ़ाई–लिखाई में भी नंबर वन। पर अपने माँ–पिताजी की अकेली संतान होने के कारण थोड़ी जिद्दी हो गयी थी। मन करते तक घर में अकेली खेलती थी। आखिर कब तक खेलती? बोर हो जाती थी बेचारी। आसपास उसकी आयु की एक भी बच्ची नहीं थी। इस मुहल्ले में पंद्रह दिन हुए थे उन्हें आए हुए। माँ घर पर रहती थी। पिताजी काम पर चले जाते थे। जहाँ वे लोग पहले रहते थे। उस कॉलोनी की प्रिया को बहुत याद आती थी।

एक दिन प्रिया टीवी देख रही थी। कॉर्टून समाप्त होते ही वह कुछ बोलती, इससे पहले माँ बोली– तुम एक काम करो प्रियू! एक छोटी–सी कटोरी में पानी रखकर तुलती चौरा के पास रख दो।

''क्यों माँ?'' प्रिया सोफे से उठते हुए बोली।

''तुम रखो तो पहले। मैं तुम्हारे लिए बढ़िया नाश्ता बना रही हूँ। गुलगुल भजिया बना रही हूँ। सौंफ डाल दूँगी और इलायची भी। फिर मस्त बढ़िया गुबुल–गुबुल खाना।'' रसोई से माँ बोली।

''अरे वाह! तब तो मजा आएगा माँ! हाँ.... माँ ठीक है।'' कहते हुए प्रिया ने कटोरी भर पानी तुलती चौरा के पास रखा। थोड़ी देर बाद देखती है कि कहीं से एक गौरैया आयी और कटोरी के पास आकर बैठी। पहले वह इधर–उधर देखने लगी। फिर कटोरी का

पानी पीने लगी। प्रिया को बहुत अच्छा लगा गौरैया को पानी पीते देख। उसने तुरंत अपनी माँ को आवाज लगायी और दिखाया। दोनों बहुत प्रसन्न हुए। पानी पीने के बाद गौरैया फुर्र से उड़ गयी। माँ बोली– ''रोज ऐसे ही रखना प्रियू बिटिया।'' ''पशु–पक्षियों के लिए इस तरह भोजन–पानी की व्यवस्था करना बहुत आवश्यक है। ऐसी भीषण गर्मी में पशु–पक्षी थर्रा जाते हैं। कभी–कभी भूख–प्यास के मारे उनकी जान चली जाती है।'' प्रिया माँ की बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी।

दूसरे दिन प्रिया ने एक बड़ी कटोरी में पानी रखा। पंद्रह–बीस मिनट बाद चार–पाँच गौरैया आयीं। वे पानी पीने लगीं। प्रिया अपने कमरे की खिड़की से देख रही थी। तभी दो गौरैया खिड़की के छज्जे पर आकर बैठ गयी। प्रिया को झाँक–झाँक कर देखने लगी। प्रिया खुशी से चहक उठी। माँ को बताने चली गयी। आकर दोनों ने देखा। फिर दोनों चिड़िया उड़ गयी। माँ बोली– ''निराश नहीं होना मेरी रानी बिटिया! देखना वे कल फिर आएँगीं।'' फिर प्रिया मोरी में नहाने चली गयी।

अब तो प्रतिदिन तीन–चार नहीं दर्जन भर गौरैया आने लगी थीं। प्रिया उनके आने से पहले ही कनकी, चने के छिलके या रोटी के टुकड़े कटोरी के पास रख देती थी। और पहले से अधिक मात्रा में डाल दिया करती थी। गौरैयों को भी रोज–रोज प्रिया के घर आना अच्छा लगता था। उनकी संख्या दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही थी। जैसे ही गौरैया आतीं, प्रिया उनके खाने के लिए कुछ न कुछ कटोरी के पास रख देती थी। पानी भी रख देती थी। सब के सब दाना चुगतीं, पानी पीती, और फुर्र हो जातीं। प्रिया आँगन में चार–पाँच जगहों पर अब मिट्टी के सकोरे में पानी रखती थी। अब तो गौरैयाएँ प्रिया की आवाज परखने लगी थीं। तभी तो उसकी आवाज सुनकर कहीं पर भी रहतीं, आँगन पर आ जातीं और चींचीं–चींचीं करना शुरु कर देतीं। प्रिया भी उनकी आवाज सुनकर बाहर निकल आती। उन्हें छू–छू कर देखती। और खुश होती।

– बालोद (छत्तीसगढ़)

छः अँगुल मुस्कान

राजू (पहलवान से)– तुम एक बार में कितने लोगों को उठा सकते हो?

पहलवान– कम से कम १० लोगों को।

राजू– बस! मेरा मुर्गा सुबह पूरे मोहल्ले को उठा देता है।

*****

बंटी– यार उठ भूकंप आ रहा है, सारा घर हिल रहा है?

बबली– सो जा, सो जा, घर गिरेगा तो मकान मालिक का, हम किराएदार हैं।

*****

डॉक्टर– अब स्वास्थ्य कैसा है?

रोगी– पहले से अधिक खराब है।

डॉक्टर– दवा खा ली थी?

रोगी– नहीं।

डॉक्टर– मेरा मतलब दवा पी ली थी?

रोगी– नहीं दवा तो लाल थी।

डॉक्टर– अरे यार दवा को पी लिया था?

रोगी– नहीं पीलिया तो मुझे था।

*****

एक कुकिंग प्रतियोगिता में चिंटू ने भाग लिया। सारे लोग कुछ न कुछ बना रहे थे। चिंटू केवल खाली बर्तनों में चम्मच घुमा रहा था। यह देखकर एक प्रतियोगी ने उससे पूछा– क्या बना रहे हो?

चिंटू– उल्लू।

सिद्धार्थ से गौतम बुद्ध

– लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

लुम्बिनी में जन्में महात्मा बुद्ध,
विश्व को दिया सत्य का ज्ञान।
राज पाठ वैभव को तज कर,
सिद्धार्थ से बने बुद्ध भगवान।।

राजा शुद्धोधन तात थे उनके,
सरल माया देवी रहीं जननी।
इक्ष्वाकु वंश के क्षत्रिय नृप,
यशोधरा बनी उनकी पत्नी।।

सत्य, अहिंसा व करुणा को,
सारी दुनिया में फैलाया था।
शांति और धर्म पालन करना,
जन–जन को समझाया था।।

पूरी दुनिया में है मिली प्रसिद्धि,
सबने बुद्ध को प्रभु मान लिया।
पीपल वृक्ष के नीचे घोर तपस्या,
बुद्ध ने सत्य ज्ञान प्राप्त किया।।

वर्तमान को माने भगवान बुद्ध,
शांति का अनूठा संदेश दिया।
सबसे बड़ा धन होता है संतोष,
मानवता पे उन्होंने जोर दिया।।

पावन विशिष्ट पर्व बुद्ध पूर्णिमा,
हम भगवान बुद्ध को याद करें।
खुद उनके पथ पर चलना सीखें,
सबसे अनुकरण की बात करें।।

युद्ध नहीं हम बुद्ध को अपनाएँ,
सबको यह बात समझाना होगा।
सुख–सुविधा व वैभव त्याग कर,
हमें मानवता को अपनाना होगा।।

पूरे जग में महात्मा बुद्ध पूजे जाते,
तथागत को करबद्ध अभिनंदन है।
ज्ञान की खोज में जीवन समर्पित,
हमारा महात्मा बुद्ध को वंदन है।।

– कैतहा, बस्ती (उ. प्र.)

पुण्यश्लोका राजमाता देवी अहिल्याबाई होळकर की दानशीलता में प्रतिबिंबित

भारत की सांस्कृतिक एकता

– उमेश कुमार नीमा

१९८० के दशक में इन्दौर जिला पुरातत्व संघ का उल्लेख था कि होळकरों से संबंधित एक दुर्लभ फोटो एलबम राजवाड़ा स्थित कलाकारों के कुलदेवता **मल्हारी मार्तण्ड** मंदिर के भी थे। इस मंदिर के अंदर पूजा घर में रखे देवी–देवताओं के साथ लोकमाता अहिल्याबाई होळकर की धातु की बनी एक छोटी–सी प्रतिमा भी चित्र में दिखाई दे रही थी।

अहिल्याबाई के समकालीन चरित्र लेखकों, कवियों और अन्य लोगों ने भी माना है। किसी महाराजा, महारानी या शासक को लोग उसके जीवनकाल में ही अगर देवत्व प्रदान कर उसे पूजनीय मान लें, तो ऐसा होना केवल तभी संभव हो सकता है जब उस शासक या शासिका के राजस्व सिद्धांत और नीतियों में व्यापक स्तर पर जन कल्याण की भावना निहित रही हो।

अहिल्याबाई होळकर, अठारहवीं सदी के भारतीय शासकों में संभवत: एकमात्र ऐसी शासिका थीं, जो जन–कल्याण की इस कसौटी पर खरी उतरीं। अपने जीवनकाल में ही उन्हें नारी से देवी बनने का गौरव प्राप्त हुआ तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए भी वे श्रद्धा और पूजा की पात्र बनी रही हैं।

यह प्रश्न स्वाभाविक है कि १८वीं सदी के अस्थिर और अराजक युग में होळकर राज्य जैसे एक छोटे राज्य की शासिका अहिल्याबाई, देवी या लोकमाता होने का गौरव एवं सम्मान क्यों कर प्राप्त कर सकीं? इस प्रश्न का उत्तर उनके लगभग तीन दशक के शासनकाल (१७६७–१७९५) के गहन अध्ययन के बाद ही जाना जा सकता है। इस अध्ययन का सार निकलता है कि अपने राजकर्म का निर्वाह उन्होंने पूरी योग्यता के साथ किया किन्तु राज–पाठ की मोहमाया और बुराइयों से वे निर्लिप्त रहीं।

उन्होंने **राज्य को भगवान शिव की धरोहर तथा राजकोष को जनता की धरोहर** मानते हुए लोक कल्याण की नीतियों को जिस तरह कार्यरूप में परिणित किया, उसी से उनकी जीवनकाल में ही **लोकमाता** का दर्जा मिल सका। उनकी सरल, सहज और सादी जीवन शैली भी उनके प्रति लोगों की श्रद्धा का एक बड़ा कारण सिद्ध हुई। मानवीय संवेदनाओं को समझने और जानने की उनमें अपार क्षमता थी।

अहिल्याबाई की महानता के अन्य आधार थे– उनका न्यायप्रिय शासन, सर्वधर्म समभाव और सहिष्णुता की नीति, महेश्वर तथा इंदौर कस्बों का विकास एवं उनका एक कुशल राजनेत्री होना।

परन्तु उनके जिस कार्य ने अखिल भारतीय ख्याति और महानता प्रदान की वह भी उनकी दानशीलता तथा निर्माण कार्य। उनकी दानशीलता

की दो प्रमुख विशेषताएँ– एक तो है उनकी दानशीलता तथा निर्माण कार्य का सार्वजनिक उपयोगिता के सिद्धांत पर आधारित होना। अर्थात् आम लोगों के उपयोग के लिए धर्मशालाओं, घाटों, कुओं, बावड़ियों तथा मंदिरों एवं अन्नकूट का विशाल निर्माण कार्य।

दूसरी विशेषता है सार्वजनिक उपयोगिता के सिद्धांत पर आधारित दानशीलता के पीछे **उनकी अखिल भारतीय दृष्टि** जिसे कुछ लेखकों ने **सांस्कृतिक राष्ट्रवाद** का नाम भी दिया है। उनकी दानशीलता की नीति की और आर्थिक व्याख्या करते हुए हम यह कह सकते हैं कि उनकी दानशीलता से जुड़े सार्वजनिक निर्माण कार्य उनके छोटे से राज्य की सीमाओं तक सीमित न रहकर उत्तर में बद्रीनाथ से लेकर दक्षिण में रामेश्वरम् तक तथा पश्चिम में द्वारका से लेकर पूर्व जगन्नाथपुरी तक के विशाल भारतीय क्षेत्र में फैले हुए हैं। उनकी यह अखिल भारतीय दृष्टि उनके मनो मस्तिष्क में बैठी भारत की सांस्कृतिक एकता तथा उनके राष्ट्रीय भावों को अभिव्यक्त करती है।

व्यावहारिक और उपयोगी दानशीलता के प्रतीक देवी अहिल्याबाई के निर्माण कार्यों की विस्तृत सूची और प्रामाणिक जानकारी होळकर रिकार्ड में उपलब्ध है। चारधाम, सात पुरियाँ तथा बारह में से आठ ज्योतिर्लिंग के अलावा सारे भारत में फैले ४३ ऐसे अन्य स्थान है जो इस अधिकृत सूची में शामिल हैं।

बद्रीनाथ (हिमालय) धाम में पाँच धर्मशालाओं सहित कुछ तेरह निर्माण कराए गए जिसमें **कुण्ड** और मंदिर भी सम्मिलित हैं। इसी प्रकार द्वारका, रामेश्वरम् तथा जगन्नाथ धामों में भी निराश्रितों के लिए आश्रमों एवं मंदिर आदि के निर्माण हुए। सात पुरियों (नगरों) में दानशीलता की गंगा सबसे अधिक बनारस, अयोध्या और उज्जैन में बही।

बनारस में काशी विश्वनाथ की पुनर्स्थापना, पुरुषों एवं महिलाओं के लिए अलग–अलग मणि कर्णिका घाट, ६ मंदिर, दो धर्मशालाएँ तथा नौ निजी आवास श्रद्धालुओं एवं तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए निर्मित हुए।

अयोध्या में श्री राम मंदिर एवं सरयू घाट सहित कुछ सात निर्माणों का उल्लेख है। उज्जैन में लीला पुरुषोत्तम मंदिर समेत चार मंदिर एवं एक विश्राम गृह बने। मथुरा में चैन बिहारी मंदिर और कालिया घाट सहित चार निर्माण हैं।

हरिद्वार में घाट और विश्रामगृह बनाए। ज्योतिर्लिंगों में श्री सोमनाथ (काठियावाड़) में १७८५ में प्रतिमा की पुनर्स्थापना, मल्लिकार्जुन (मद्रास प्रेसीडेन्सी) में मंदिर निर्माण, औंकारेश्वर में चाँदी की प्रतिमा, फूलों का बाग, नौकाओं की व्यवस्था तथा कुछ अन्य निर्माण हुए। श्री वैजनाथ (निजाम स्टेट) में मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ।

त्र्यंबकेश्वर में कुशावर्त घाट पर पुल निर्माण हुआ तथा अन्य ज्योतिर्लिंगों पर सुविधाओं के विस्तार में सहयोग किया गया। समस्त ज्योतिर्लिंगों तथा अन्य प्रमुख शिव मंदिरों में महाशिवरात्रि के अवसर पर कावड़ द्वारा निश्चित समय पर गंगाजल पहुँचाने की व्यवस्था की गई।

४३ अन्य स्थान जहाँ दानशीलता के प्रतीक निर्माण या अन्य कार्य हुए इनमें चित्रकूट, पुष्कर, वृंदावन, नाथद्वारा, कुरुक्षेत्र, वेरूळ, बुरहानपुर, प्रयाग, अमरकंटक, पंढरपुर, जेजूरी (महाराष्ट्र),

संगमनेर, पूना, कुम्भेर, नासिक, वफगांव, रावेर, मीरी(अहमदनगर) किरण तथा बीड़ (निजाम स्टेट) आदि सम्मिलित हैं। महेश्वर के घाट, मंदिर और छत्रियाँ अहिल्याबाई की गौरव गाथा अभी भी कह रहे हैं।

दानशीलता के रूप में किए गए इस सांस्कृतिक उत्थान की एक विशेष बात यह थी कि इसे स्थायित्व प्रदान करने के लिए इनके रखरखाव की स्थाई एवं दूरगामी व्यवस्था की गई। निर्माण कार्यों एवं वहाँ काम करने वाले पुजारियों एवं सेवकों आदि के लिए भूमि या अनुदान की व्यवस्था की गई। जिससे लोगों को सुख और सुविधाएँ सतत् मिलती रहें।

इंदौर स्थित खासगी एवं आलमपुर ट्रस्ट के माध्यम से आज भी रामेश्वरम् (तमिलनाडू), गोगरण (कर्नाटक), जेजूरी, पंढरपुर, चौंडी, चांदवड, नासिक (महाराष्ट्र), उत्तरप्रदेश के वाराणसी, प्रयागराज, हरिद्वार, संभल, नैमिषारण्य, राजस्थान में पुष्कर, मध्यप्रदेश में महेश्वर, औंकारेश्वर, इंदौर, आलमपुर (भिण्ड) तथा भानपुरा आदि के रखरखाव और गरिमामयी व्यवस्था जारी है।

१७८५ में लगभग ७० वर्ष की अवस्था (१७२५-१७९५) में लोकमाता अहिल्याबाई ने अपना शरीर त्याग किया। जब १७५४ में उनके पति खण्डेराव होळकर की मृत्यु हुई तब वे लगभग २९ वर्ष की थीं। अपने श्वसुर और इंदौर के होळकर राज्य के संस्थापक सूबेदार मल्हारराव होळकर से उन्होंने जो प्रशासनिक, राजनैतिक एवं सैनिक कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त किया उसकी सार्थकता अहिल्याबाई ने अपने कार्यों द्वारा सिद्ध की। उनकी दानशीलता एवं निर्माण कार्यों की महानता के बीच उनकी राजनैतिक एवं सैनिक उपलब्धियाँ कुछ आच्छादित भले ही हो जाती हैं परन्तु वे किसी भी स्थिति में कम गौरवपूर्ण नहीं थीं।

– इन्दौर (म. प्र.)

आओ हँस लो

नौकर– श्रीमान! आपसे डॉक्टर साहब मिलने आये हैं।

पप्पू– मुझे बुखार है। उन्हें कल आने के लिए कह दो।

*****

शिक्षक– जल और जमीन, दोनों में रहने वाले जानवर का नाम बताओ?

छात्र– मेंढक।

शिक्षक– बहुत अच्छे एक और बताओ।

छात्र– एक और मेंढक।

*****

गबलू– सूरज रात को क्यों नहीं निकलता?

बबलू– निकलता तो होगा किन्तु अँधेरा इतना होता है कि हमें दिखाई ही नहीं देता।

*****

बंटी (दुकानदार से)– मोबाईल में एमपी३ गाने लोड करवाने हैं।

दुकानदार– मेमोरी कार्ड है क्या?

बंटी– वो तो नहीं है, आधार कार्ड या पैन कार्ड चलेगा क्या?

*****

टीचर– १०० चूहे खाकर बिल्ली चली.....। इस वाक्य को पूरा करो।

चिकू– बिल्ली हौले-हौले चली।

टीचर– गलत जवाब।

चिकू– आपका लिहाज कर इतना भी बोल दिया, वर्ना इतने चूहे खाकर तो कोई हिल भी नहीं सकता।

*****

छोटा बच्चा (एक दुकानदार से)– काका सुंदर बनाने वाली क्रीम है?

दुकानदार– हाँ है?

बच्चा– तो लगाते क्यों नहीं मैं रोज डर जाता हूँ।

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

सौंदर्य की रानी है–पचमढ़ी

– डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

यों तो मध्यप्रदेश में भ्रमण हेतु अनेक सौंदर्यपूर्ण स्थान है। पर पचमढ़ी एक ऐसी स्थली है जो 'सौंदर्य की रानी' कहलाती है। यहाँ आप बड़ी आसानी से पहुँच सकते हैं। वायु–मार्ग, सड़क–मार्ग या रेल–मार्ग से म. प्र. की राजधानी भोपाल आ जाइए। यहाँ से पचमढ़ी के लिए टैक्सी, बस मिल जाएगी। सड़क मार्ग से आ रहे हैं, तो होशंगाबाद, नागपुर, पिपरिया, छिंदवाड़ा से बसें मिल सकती हैं।

रुकने की कोई दिक्कत नहीं है। म. प्र. पर्यटन विकास के होटल और लोकनिर्माण विभाग के टूरिस्ट होटल हैं। पिपरिया में भी म. प्र. पर्यटन विकास के होटल हैं। म. प्र. पर्यटन विकास द्वारा पूर्व से ही आरक्षण करवाया जा सकता है। निकटवर्ती हवाई मार्ग भोपाल १९५ किलोमीटर है। पचमढ़ी आने वाला व्यक्ति यहाँ की खूबसूरत वादियों को निहारता रह जाता है। सतपुढ़ा की पर्वत–शृंखलाओं से रचा–बसा पचमढ़ी प्रत्येक दिवस सौंदर्य की नई छटाएँ बिखेरता नजर आता है।

जंगली बांस, जामुन के उपवन, साल वृक्षों के सघनवन सभी को आकर्षित करते हैं। मंद–मंद बहने वाले झरने, पहाड़ों की शोभा बढ़ाते हैं। जब सूरज की किरणें झरनों पर पड़ती हैं तो इन जल–प्रपातों का सौंदर्य द्विगुणित हो जाता है। वन्य जीव प्रेमियों के लिए यह स्थान सबसे मनोहारी है। लंगूर, सांभर, गौर, बारकिंग डियर, रीछ, जंगली कुत्ते और चीते पचमढ़ी के जंगलों में स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं।

पचमढ़ी, पुरातात्विक–वस्तुओं का खजाना है। महादेव पहाड़ियों में शैलाश्रय और उनमें शैलचित्र की बहुलता पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। इन शैलचित्रों का अंकन काल ५०० से ८०० ईसवी के मध्य माना गया है। कुछ लोग प्रारंभिक चित्रकारी को १०,००० वर्ष पुराना मानते हैं।

सबसे बड़ी बात आप यह मानिए कि वर्षभर में आप पचमढ़ी–भ्रमण के लिए कभी भी आ सकते हैं। हर समय पचमढ़ी, स्वागत के लिए तत्पर है।

जिन स्थानों पर आप भ्रमण कर सकते हैं–

प्रियदर्शिनी– यह प्राचीन जगत है जहाँ वर्ष १८५७ ईसवी में बंगाल की अश्वारोही सेना के मुखिया कैप्टन फोर साइथ यहाँ आए थे। इस स्थान से ही गिरि ग्राम की खोज प्रारंभ हुई थी।

हाँडी खोह– पचमढ़ी की सबसे आकर्षक घाटी ३०० फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यह खड़ी चट्टान के रूप में है। ढलानदार पार्श्व प्राकृतिक सौंदर्य बढ़ाते हैं। यहाँ पर पर्यटक बैठकर दूर बहते जल की मधुर ध्वनि का आनंद लेते हैं।

अप्सरा विहार में एक प्राचीन सरोवर है। जहाँ जयस्तम्भ से आसानी से पहुँच सकते हैं। इसे परी सरोवर भी कहते हैं। पिकनिक-स्पॉट के रूप में यह अत्यन्त मनोरम स्थल है। रजत प्रपात का सौंदर्य भी कम नहीं है। ३५० फुट की ऊँचाई से गिरते जल का दृश्य देखने हजारों पर्यटक पहुँचते हैं। जिन पर्यटकों की रुचि साहसिक-कारनामों में है, उन्हें सर्वाधिक आनंद आएगा।

इसी तरह राजगिरि एक हिल क्लब है। जहाँ पचमढ़ी क्लब से पहुँचा जा सकता है। यह स्थान भी ३०० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। लांजीगिरि में ऐसे लोगों को बहुत आनंद आएगा जो पहाड़ियों की सैर करने के शौकीन हैं। आहरीन सरोवर बहुत ही मनोरम सरोवर है। रीछगढ़ के पास यह बना है। ऊपरी छोर पर पहुँचने पर गुफा का मार्ग मिलता है। यहाँ से कई जल प्रपात निकले हैं। डचेस फॉल वैली ब्यू से केवल ३ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सीधी ढलान है। ४ किलोमीटर के बाद एक जल प्रपात है जो कि जल धाराओं में बंट जाता है।

सुंदरकाण्ड नाम से एक सुंदर चट्टानी सरोवर है जो डचेस फॉल से दक्षिणी पश्चिमी दिशा में २.५ किलोमीटर रास्ता तय करने के बाद मिलता है।

जटा शंकर- पाषाण खण्डों के समूह के नीचे

एक गुफा बनी है। कहा जाता है कि भगवान महादेव भस्मासुर राक्षस से बचने के लिए यहाँ आ गए थे। चट्टानों की बनावट बिल्कुल भगवान शिव की जटाओं से मिलती-जुलती हैं। इसलिए इसे 'जटा शंकर' कहते हैं।

महादेव पहाड़ी - इस पहाड़ी पर भगवान शिव का सुंदर शिवलिंग है। महादेव पहाड़ी से ४ किलोमीटर दूर सतपुड़ा पर्वत मालाएँ हैं। जहाँ महादेव पूजा के प्रतीक त्रिशूल चढ़ाने की परम्परा है। इस जगह को 'चौरागढ़' कहते हैं।

धूपगढ़ - यह स्थान भी बड़ा मनोरम है। यहाँ पर्वत शृंखलाओं के सुंदर दृश्य दिखाई देते हैं। सनसेट के दृश्य देखने भी यहाँ लोग आते हैं। यहाँ पाण्डव गुफाएँ भी बड़ी प्रसिद्ध हैं। अपने निर्वासन काल में पाण्डव यहाँ पर रहे हैं। धुँआधार नामक जगह पर चित्रकारी के अद्भुत दृश्य दिखाई देते हैं। सरदार गुफा में युद्ध विषयक दृश्य हैं। पास में ही कुछ सुंदर शैल चित्रकारी भी मिलती है।

पचमढ़ी में आप कभी भी पूरे वर्ष आ सकते हैं। भोपाल से पर्यटन विभाग की बसें भी मिल सकती हैं। निजी टैक्सी से भी आप आ सकते हैं। रुकने के लिए शासकीय और अशासकीय होटल लॉज हैं।

म. प्र. पर्यटन विभाग की वैब साइट से आप यहाँ के टूरिस्ट लॉज में आरक्षण भी करा सकते हैं।

- ग्वालियर (म. प्र.)

मकड़जाल

– डॉ. फकीरचंद शुक्ला

''अरे! यह क्या हो रहा है मेरे साथ।'' आराध्य कक्षा में बैठा मन ही मन सोच रहा था– ''मुझे धुंधला–सा क्यों दिखाई दे रहा है। आचार्य जी तथा श्यामपट्ट सभी धुंधले–धुंधले से दिखाई दे रहे थे। उसने एक दो बार आँखों को हाथों से रगड़ा भी किन्तु कोई अंतर नहीं आया।

उसे गर्दन में भी अकड़न महसूस हो रही थी तथा थोड़ा पीठ दर्द भी होने लगा था।

आराध्य के मन में आया कि आचार्यजी से छुट्टी लेकर घर जाये लेकिन यह आचार्यजी तो बच्चों की समस्याओं को बहानेबाजी ही मानते हैं। छुट्टी तो क्या देंगे अपितु उसकी पूरी बात भी नहीं सुनेंगे।

वह परेशान–सा कक्षा में अपनी सीट पर बैठा रहा, शिक्षक क्या पढ़ा रहे थे उसे रत्तीभर भी समझ नहीं आ रहा था।

पर धन्यवाद! कुछ समय पश्चात उसकी अवस्था में स्वयं ही सुधार होने लगा था लेकिन गर्दन तथा पीठ का दर्द अब भी परेशान किये जा रहा था यद्यपि पहले जितना नहीं हो रहा था। आराध्य ने चैन की सांस ली। पर उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि ऐसे क्यों हो रहा है एक दो दिन आराम से निकल जाते लेकिन फिर वही समस्या होने लगती।

और शाला से छुट्टी होने पर वह घर लौट आया था। किन्तु शाला से वापिस आने के कुछ देर बाद ही आराध्य अपने कमरे में चला आया था। माँ! ने एक दो बार उसे पुकारा भी था– ''पहले कुछ खा पी तो ले।'' पर उसने झट से मना कर दिया था। ''माँ मुझे भूख नहीं है। शाला में एक बच्चे का जन्मदिन था। उसने मध्याह्न भोजन के समय पार्टी में बहुत कुछ खिला दिया था।'' और इससे पहले कि माँ और कुछ कह पातीं उसने जैसे उन्हें सावधान करते हुए कहा था– ''अब कोई मुझे तंग मत करना। मुझे भौतिक विज्ञान का कार्य आज ही प्रस्तुत करना है।'' और अपने कमरे का किवाड़ थोड़ा भिड़ा कर उसने झट से लैपटॉप ऑन कर दिया था और शीघ्र ही वह लैपटॉप पर एक सिनेमा देखने लगा था जो कल रात उसे अधूरा छोड़ना पड़ा था। कल रात मूसलधार बारिश हुई थी। कुछ समय पश्चात लाईट भी चली गई थी।

ना जाने कैसे कल वह लैपटॉप चार्ज करना भूल गया था। इसलिए शीघ्र ही उसके लैपटॉप की बैटरी भी समाप्त हो गई थी। इसलिए वह पूरी फिल्म नहीं देख पाया था और अब शाला से लौटते ही कुछ खाने–पीने की अपेक्षा वह लैपटॉप से चिपक गया था। माँ को भी उसने झूठ बोल दिया था कि वह शाला में जन्मदिन की पार्टी में खा–पी आया था। जब से शाला वालों ने गृहकार्य ऑनलाईन अर्थात कम्प्यूटर पर देना प्रारंभ किया है तब से उसकी तो पौ–बारह हो गई थी।

पहले तो जब भी वह मोबाईल अथवा लैपटॉप पर कोई खेल खेलता तो कुछ देर बाद ही उसके माँ–पिताजी टोकने लगते थे– ''क्यों दिनभर इससे चिपटा रहता है। अन्य बच्चों की तरह बाहर जाकर क्यों नहीं खेलता।'' पिताजी की डाँट फटकार के कारण उसे अच्छी भली विडियो गेम बीच में ही छोड़नी पड़ती थी। पर पिताजी कौन–सा दिनभर घर पर रहते थे। उनके कार्यालय जाने के पश्चात् वह फिर मोबाईल से चिपक जाता था और विडियो गेम्स खेलता रहता था यद्यपि उससे रोक–टोक अधिकांश होती रहती थी। किन्तु जब से ऑनलाईन पढ़ाई शुरू हुई है उसकी तो मौज हो गई है। घर वाले जब भी रोक–टोक करते तो झट से उसका एक ही उत्तर होता है– ''मैं क्या करूँ, जब शाला वाले ऑन लाईन काम करवाते हैं तो मेरे पास क्या चारा है। अब आप ही बताएँ में लैपटॉप पर काम नहीं करूँगा तो गृहकार्य कैसे पूरा कर पाऊँगा?''

और माँ–पिताजी चुप कर जाते और आराध्य मोबाईल तथा लैपटॉप पर विडियो गेम्स खेलता रहता तथा मित्रों से चैटिंग करता रहता।

यह सिलसिला काफी देर से चला आ रहा था। वह एक बार लैपटॉप देखना शुरू करता तो एक दो घंटे से पहले वह लैपटॉप की स्क्रीन से नजरें ना हटाता। दिन–ब–दिन उसकी यह आदत कम होने की अपेक्षा बढ़ती ही जा रही थी।

आराध्य को कई दिनों से सिर दर्द भी होने लगा था। दर्द बढ़ने पर वह दर्दनिवारक गोली खा लेता। उससे कुछ समय के लिए राहत तो मिल जाती लेकिन फिर वही स्थिति हो जाती।

इनके अतिरिक्त उसे और भी कई समस्याएँ घेरने लगी थीं।

किन्तु प्रमुख समस्या आँखों की थी। कभी आँखों में पानी आ जाता तो कभी लाली छा जाती। आँखों में खुजली तो हर समय होती रहती थी।

गर्दन में अकड़न तथा पीठ दर्द से तो वह पहले ही परेशान रहता था।

आखिरकार उसके पिताजी उसे नेत्र चिकित्सक के यहाँ ले आये थे। डॉक्टर ने उसकी आँखों की जाँच पड़ताल की।

''कहिये, आपको क्या समस्या है।'' डॉक्टर ने पूछा तो आराध्य ने उन्हें जो जो परेशानी होती थी के बारे में बतलाया तो डॉक्टर ने हल्का–सा मुस्कराते हुए पूछा– ''मोबाईल कितनी देर देखते हो ?''

आराध्य ने तो कुछ नहीं कहा किन्तु उसके पिताजी झट से बोल पड़े थे– ''मोबाईल लैपटॉप का तो यह पीछा ही नहीं छोड़ता डॉक्टर साहिब! जब देखो तब इनसे चिपटा रहता है।''

''यह तो अच्छी बात नहीं बेटे!'' डॉक्टर ने आराध्य से कहा– ''हम इन सुविधाओं के गुलाम बनकर बिना कारण इनके मकड़जाल में फँसते जा रहे हैं।'' फिर उसके पिताजी की ओर देखकर बोले– ''बच्चों को मोबाईल की लत तो नशे के लत की भाँति लग गयी है।''

एक पल रुककर वह फिर कहने लगे– ''आराध्य ने अभी–अभी जो समस्याएँ बतायीं हैं जैसे आँखों में पानी आना, धुंधला–सा दिखाई देना, सिर दर्द, आँखों में खुजली तथा लाली होना मोबाईल के अत्यधिक उपयोग के कुप्रभाव हैं। इन सभी लक्षणों को हम डॉक्टरी भाषा में सी.वी.सी. अर्थात् कम्प्यूटर विजन सिंड्रोम कहते हैं।''

''तो फिर इनका कोई उपचार है डॉक्टर साहब ? लाख समझाने के बाद भी बच्चे मोबाईल का उपयोग करने से तो नहीं हटते। अब तो शाला वालों ने भी आग में घी का काम किया है। गृहकार्य भी ऑन लाईन देने लगे हैं।'' पिताजी ने कहा तो डॉक्टर तुरंत बोल पड़े– ''इसका एक मात्र उपचार तो सेल्फ कंट्रोल है अर्थात् मोबाईल का उचित उपयोग करें। हर पल इससे चिपके ना रहें।''

''कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें।'' डॉक्टर ने आराध्य की ओर देखते हुए कहा– ''ये सावधानियाँ

मात्र आपके लिए ही नहीं हैं अपितु उन सबके लिए हैं जो मोबाईल अथवा कम्प्यूटर पर काम करते हैं।''

''जी डॉक्टर साहब!'' आराध्य बोला।

''इन पर अधिक देर तक काम करने से आँखों का पानी सूख जाता है। शुष्क आँखों का दृष्टि पर भी कुप्रभाव पड़ता है।''

''मोबाईल पर काम करते समय थोड़ी-थोड़ी देर बाद जोर-जोर से पलकें झपकाएँ। ऐसा करने से आँखों को आराम मिलता है। सबसे आवश्यक है कि आप २०-२०-२० का सूत्र अपनाएँ।''

''यह कैसा सूत्र है डॉक्टर साहब?''

''बेटे! इसमें मोबाईल/कम्प्यूटर पर २० मिनट काम करने के पश्चात् २० सेंकड के लिए २० फीट की दूरी तक देखें। इससे आपकी आँखों को काफी आराम मिलता है।''

''और हाँ।'' डॉक्टर ने सावधान करते हुए कहा- ''मोबाईल के अत्यधिक उपयोग से न्यूरोलाजिया नामक रोग हो सकता है।''

''यह कैसा रोग है डॉक्टर साहब?'' आराध्य की इसके बारे में जानने की उत्सुकता बढ़ गयी थी।

''इस रोग में शरीर की कोई भी नस प्रभावित हो सकती है जिससे गर्दन से लेकर कोहनी में दर्द, कंधों में सुन्न अनुभव होना तथा कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे नुकीली वस्तु चुभ रही हो।''

''बाप रे!'' अनायास ही आराध्य के पिताजी के मुँह से निकल पड़ा था- ''इतना नुकसान हो जाता है।''

''हाँ! तभी तो बच्चों को समझाते हैं कि मोबाईल के उपयोग पर नियंत्रण रखें। नशे की भाँति इसकी लत लगाकर इसके गुलाम ना बनें। इनका उपयोग लगातार ना करें। बीच-बीच में उठकर टहलें और नियमित व्यायाम अवश्य करें।'' और डॉक्टर ने जैसे अंतिम चेतावनी देते हुए कहा था- ''यदि नहीं सम्भलोगे तो फिर अपना ही नुकसान करोंगे।''

डॉक्टर की सलाह भरी बातें सुनकर आराध्य कुछ राहत अनुभव कर रहा था बार-बार उसके मन में यह विचार कौंध रहा था कि स्वस्थ रहना है तो उसे बिना कारण मोबाईल उपयोग करने की अपनी आदत पर अंकुश लगाना ही होगा।

- लुधियाना (पंजाब)

प्रसंग

कबीर का लोटा

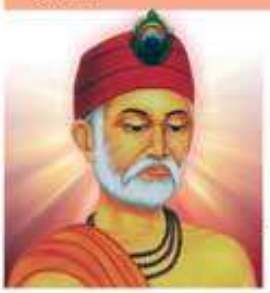

- संजीव कुमार 'आलोक'

प्रतिदिन की भाँति जब संत कबीर गंगा स्नान के लिए गंगा तट पर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ काफी लोग गंगा स्नान कर रहे थे। पानी काफी गहरा होने के कारण बहुत से ब्राह्मण को पानी में उतरने का साहस नहीं कर पा रहे थे। यह सब दूर से संत कबीर देख रहे थे। तब उनके मन में क्या सूझा कि वह अपना लोटा मांज-धोकर पास स्नान कर रहे एक व्यक्ति को दिया और उससे कहा कि- ''जाओ, वहाँ जो ब्राह्मण स्नान करना चाहते हैं उन्हें यह लोटा दे आओ ताकि वह सुविधा से स्नान कर लें।''

वह व्यक्ति जब संत कबीर का लोटा लेकर ब्राह्मणों के पास पहुँचा तो कबीर का लोटा देखते ही ब्राह्मणों ने चिल्लाना शुरू कर दिया। ''अरे! जुलाहे के लोटे को दूर रखो।! इससे स्नान करके तो हम सभी ब्राह्मण अपवित्र हो जाएँगे।''

तभी वहाँ संत कबीर आकर बोल पड़े कि- ''इस लोटे को कई बार मिट्टी से मांजा और गंगा जल से धोया गया है। यदि फिर भी साफ न हुआ तो दुर्भावनाओं से भरा मानव शरीर गंगाजी में स्नान करने से कैसे पवित्र होगा?'' **- बाढ़ (बिहार)**

विचित्र स्थिति

चित्रकथा: देवांशु वत्स

बाल बाल बची

– रजनीकांत शुक्ल

कैसा खतरनाक दृश्य था। जब वह उस हादसे से दो चार हुई थी। वह घटना याद करके श्रेष्ठी का कलेजा आज भी मुँह को आ जाता है।

वह याद करती है कि वह वर्ष २०११ के दिसम्बर महीने की नौ तारीख थी। तब वह सोलह वर्ष की थी। जब एक दिन घर परिवार और संबंधियों ने मिलकर पिकनिक मनाने की योजना बनाई थी।

श्रेष्ठी का घर महाराष्ट्र राज्य में ठाणे जिले के लुइसबाड़ी क्षेत्र में था। वे लोग बरवी बाँध पर जाना चाहते थे। जो नदी पर बना था। जिसका पानी एक बड़े क्षेत्र में पीने और विभिन्न उपयोगों में लिया जाता था।

वे लोग नदी के पास पहुँच गए। वे काफी सारे लोग थे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने नदी के किनारे एक जगह पर अपना ठिकाना बनाया और फिर एक साथ मिलकर नदी में नहाने के लिए उतरने की योजना बनाई।

जब बहुत सारे लोग हमारे साथ होते हैं तो एक अतिरिक्त सुरक्षा का भाव सबके मन में आ जाता है। जब हमसे बड़े लोग साथ में होते हैं तो यह भाव सघन हो जाता है। कि हमें कुछ नहीं होगा यदि कुछ होगा भी तो ये सारे लोग हमें बचा लेंगे।

यहीं पर हम धोखा खा जाते हैं। इस बड़े समूह के लोगों के साथ भी यही कुछ हुआ। नदी में अन्दर उतरने के साथ कुछ छोटे बच्चों के मन में यह भाव आया और वे नदी में कुछ अन्दर तक घुसकर मजे करने लगे। खेल-खेल में पता नहीं कब किसी बच्चे का पैर फिसला और वह नदी में गहराई की ओर सरक गया। जिसे बचाने के लिए एक-एक कर कई लोग उसके पीछे गए और नदी की धारा और उसकी गहराई का शिकार बन गए।

पहले उन्होंने स्वयं से ही सँभलने और बचने बचाने का प्रयत्न किया। किन्तु जब उन्हें लगा कि वे उससे पार नहीं पा पाएँगे। तो उन्होंने सहायता की गुहार लगाई। जिस समय उनकी बचने के लिए सहायता की पुकार सुनाई दी उस समय श्रेष्ठी अमृत गोरूले नदी में तैरने के बाद किनारे तक पहुँच चुकी थी।

जैसे ही उसके कान में सहायता के लिए की गई यह चीख पुकार की आवाज सुनाई पड़ी उसने तुरन्त पलटकर देखा तो उसने मनीषा बोमबले, प्रगति सूर्यवंशी, पिंकी शिन्दे, अंगराज शिन्दे और मंगेश बोमबले को नदी के बीच फँसे पाया। वे लोग उस समय अपने जीवन को बचाने के लिए लहरों के साथ संघर्ष कर रहे थे।

उनकी बचाव के लिए निकलने वाली चीखों को सुनकर श्रेष्ठी स्वयं को न रोक पाई और उन्हें बचाने के लिए नदी में कूद गई। तेजी के साथ तैरती हुई वह उन लोगों की ओर बढ़ी। वे सभी पाँच लोग इस समय संकट में फँसे हुए थे। वह उन सबको बचाना चाहती थी। इसलिए बड़ी तेजी से उन सबकी ओर बढ़ी चली जा रही थी।

वह शीघ्रता से उन तक जा पहुँची। वह जिनके पास सबसे पहले पहुँची थी वे प्रगति और पिंकी थीं।

श्रेष्ठी के मन में था कि वह तेजी से प्रयास करके उन सब लोगों को बचा लेगी लेकिन वह जैसे ही प्रगति और पिंकी के पास पहुँची वे दोनों अपने बचाव के लिए श्रेष्ठी के ऊपर झपट पड़ीं। डूबते को तिनके को सहारा ऐसे ही नहीं कहा गया। वास्तव में जब कोई डूब रहा होता है तो बचाव के लिए जो भी उसके सामने आता है उसे पकड़कर डूबने से बचना चाहता है।

ऐसे में कई बार डूबने वाला बचाने वाले को भी डुबा देता है। ऐसे लोगों के लिए ही कहा गया है कि हम तो डूबेंगे सनम तुमको भी ले डूबेंगे। वह जानबूझकर ऐसा नहीं करता है किन्तु कई बार ऐसा हो जाता है। श्रेष्ठी के साथ भी ऐसा ही हो जाता यदि वह सतर्क न होती। उसने अपने आपको झुकाई लेकर बचाया और उनकी पकड़ से बच गई।

श्रेष्ठी पहले ही काफी देर नदी में अभी तैरकर नहा चुकी थी। उसे थकान भी थी किन्तु उन लोगों की जान को बचा लेने का उत्साह उसकी रगों में अतिरिक्त उत्साह भर रहा था। अब उसे उन लोगों को बचाने के लिए स्वयं को भी बचाना था। नहीं तो डर यही था कि वे कहीं उसे ही न डुबा दें।

उसने सावधानीपूर्वक उनमें से एक को उसके

पीछे जाकर किनारे की ओर के लिए धक्का मारा। वह उसे पैर से हाथ से धकेलती हुई किनारे तक ले आई। उसे किनारे करके वह दूसरी लड़की के पास पहुँची और उसके बालों को कसकर पकड़कर उसे भी नदी के बीच से खींचती हुई किनारे तक ले आई।

वह थकने लगी थी अभी वह किनारे से चार पाँच फिट की दूरी पर थी तभी उसके साथ गए देवकुले नदी में उतरकर आगे बढ़े और उन्होंने सहारा देकर उन दोनों को पानी से बाहर निकालने में सहायता की। वे नदी से बाहर आए तो उन्होंने आँख उठाकर देखा कि नदी के अंदर के बाकी लोगों को देखा तो उन्हें उनमें से कोई भी दिखाई नहीं दिया। यह बहुत ही दु:खद था।

बाद में उन लोगों को नदी से बाहर निकाला गया। इस हादसे में मंगेश बोमबले, मनीषा बोमबले और अंगराज शिन्दे ने अपनी जान गँवा दी थी। श्रेष्ठी की हिम्मत से उन डूबते लोगों में से दो लड़कियों प्रगति और पिंकी की जान बच सकी।

बरबी बाँध महत्वपूर्ण जगह थी जहाँ पर डूबकर एक परिवार के तीन लोगों की मृत्यु होने के कारण यह समाचार–पत्रों के लिए बड़ी खबर थी। किन्तु इसके साथ ही श्रेष्ठी के साहसिक प्रयास से दो लोगों का जीवन बचाने का ब्यौरा भी आया। जिसे पढ़कर लोगों ने श्रेष्ठी के साहस की सराहना की और उन्होंने उसका नाम वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया।

श्रेष्ठी को वर्ष २००२ के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। वर्ष २००३ के गणतंत्र दिवस के अवसर पर श्रेष्ठी को देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के द्वारा राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया।

नन्हें मित्रो,

जब तक जिओ उठा सिर जिओ कायरता का काम न हो,
जितना दम हो भर कोशिश कर, नाकारों में नाम न हो।
चलते चलो सदा चींटी से इस मेहनत की शाम न हो,
बैठे रहे नहीं कोशिश की, ऐसा तो इल्जाम न हो।।

– नई दिल्ली

सुनहरी निबवाला फाउंटेन पेन

– डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम

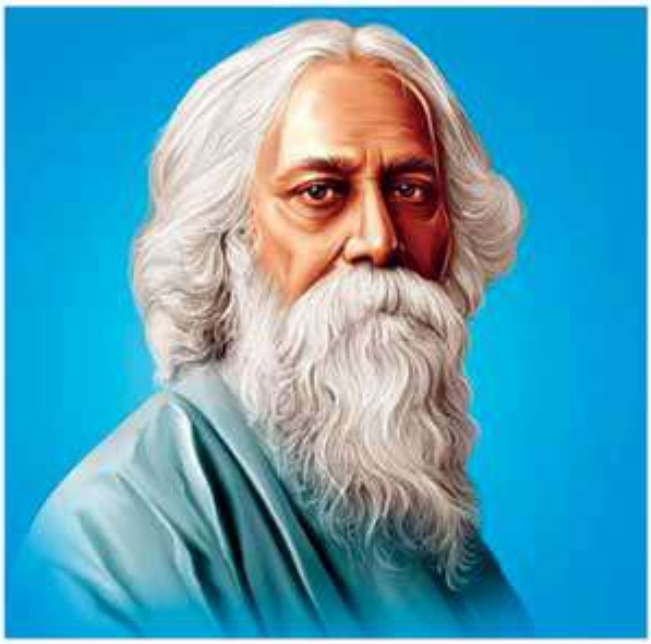

घटना शांति निकेतन की है। एक बार गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का सुनहरी निबवाला फाउंटेन पेन कहीं खो गया। यह पेन किसी ने उन्हें उपहार में दिया था और उपहार में मिली किसी भी वस्तु को खूब संभाल कर रखना उनकी आदत थी। पेन के खो जाने के कारण गुरुदेव रवीन्द्रनाथ थोड़ी बेचैनी महसूस कर रहे थे। पर उन्होंने इस घटना के बारे में किसी से कोई चर्चा नहीं की।

एक दिन की बात है। एक छात्र सोने की निबवाला एक सुंदर पेन लाया। उसे दूसरे छात्र को दिखाते हुए बड़े गर्व के साथ कहने लगा, ''जानते हो! मेरे जन्मदिन पर गुरुदेव ने स्वयं यह पेन मुझे उपहार में दिया है।''

यह सुनकर दूसरे छात्र को स्वाभाविक ही थोड़ी ईर्ष्या हुई। मन ही मन उसे गुरुदेव पर गुस्सा आया। वह गुरुदेव की इतनी सेवा करता था। पर गुरुदेव ने उसे तो कभी कुछ नहीं दिया। रात में अवसर मिलने पर वह छात्र गुरुदेव से पूछ ही बैठा, ''गुरुदेव! आखिर मुझमें क्या अपराध हुआ है?''

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कुछ समझ में नहीं आया कि यह छात्र क्या कहना चाह रहा है? उन्होंने उससे पूछा, ''आखिर बात क्या है? तुझसे क्या अपराध हो सकता है भला?''

छात्र मान भरे अंदाज में बोला, ''आप हमें तो कभी कुछ नहीं देते और अपना कीमती फाउंटेन पेन तक आपने उस छात्र को दे दिया।''

इतनी देर बाद, अब गुरुदेव को समझ में आया कि मूल बात क्या है? वे उस छात्र से बोले, ''अच्छा तो भाई! यह बात है। कई दिनों से ही उस पेन के कारण मैं परेशान था। सोचता था कि शायद मैंने ही भूल से उसे कहीं रख दिया है। चलो, तुम्हारी बात से चिंता दूर हुई। मैं निश्चिंत हुआ।''

वह छात्र तो समझ ही गया कि पेन गुरुदेव ने दिया नहीं, बल्कि उनके यहाँ से चुरा लिया गया है। लेकिन गुरुदेव का रुख देखकर उसे आश्चर्य हुआ। चोर को सजा न देकर वे अपने निश्चिंत होने की बात कर रहे थे। न रहा गया तो वह छात्र पूछ ही बैठा, ''तो क्या उस छात्र को आप दण्ड नहीं देंगे?''

दण्ड की बात सुनकर गुरुदेव चौंके। बोले, ''छीं! यह क्या सोचते हो। उसे अपने किए पर स्वयं ही पछतावा होगा। अधिक शर्मिंदा करना ठीक नहीं। तुम तो उसकी चोरी वाली बात जान गए हो, पर यह बात उस पर प्रकट न होने देना।''

छात्र को गुरुदेव की यह बात बड़ी अजीब लगी। वह पूछ बैठा, ''तो इस तरह क्या आप चोर को छोड़ देंगे?''

हँस दिए गुरुदेव! बोले, ''भाई! तुम लोगों की तो कोई चीज नहीं चुराई उसने। मेरे पेन की उसने चोरी की है। उसने यह सोचकर नहीं चुराया होगा। वह तो तुम लोगों की नजरों में चढ़ना चाहता होगा, यह दिखाकर कि गुरुदेव ने स्वयं अपने हाथों से मुझे पेन

भेंट किया है। शायद यह भी हो सकता है कि मेरी कलम से लिखकर वह कोई बड़ा लेखक बनना चाहता हो।''

छात्र अब भी गुरुदेव के उत्तर से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुआ। इसलिए उसने पूछा– ''ठीक है! आप उसे दण्ड न दें। पर लोगों को इस चोरी के बारे में पता चले, आखिर इसमें क्या बुराई है?''

गुरुदेव ने शांत रहकर उत्तर दिया, ''देखो! अपराधी इस घटना से स्वयं अपने आगे छोटा हो गया है। शर्मिंदगी के कारण वह मेरे पास आज कई दिनों से आया भी नहीं है। उसे पश्चाताप की आग में जलने दो। चोरी की बुराई के बारे में उसे स्वयं पता चल जाएगा। और आगे के लिए हमेशा–हमेशा को उसके कदम संभल जाएँगे। पर यदि सबको इस चोरी के बारे में खबर हो गई, तो उसकी शर्म मिट भी सकती है। आगे फिर उसके लिए चोरी का रास्ता हमेशा के लिए खुल जाएगा।''

– कानपुर नगर (उ. प्र.)

लघुकथा

नीली चिड़िया

– डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

जंगल में शेर जोर–जोर से हाऊँ हाऊँ करके रोज–रोज सारे जानवरों को डराता था। सब जानवरों ने यह बात नीली चिड़िया को बताई। नीली चिड़िया बहुत चतुर थी। उसने कहा– ''मैं अभी शेर को मजा चखाती हूँ।''

शेर दहाड़ रहा था– ''हाऊँ–हाऊँ।'' नीली चिड़िया फुर्र–फुर्र करके शेर के कान में घुसकर गुदगुदी करने लगी। शेर हाऊँ–हाऊँ करना भूल गया। उसे गुदगुदी लग रही थी। वह ऊँ ऊँ ऊँ करने लगा। शेर चिड़िया को पकड़ने दौड़ा पर चिड़िया तो फुर्र से आकाश में उड़ गई। सारे जानवर ताली बजाकर हँसने लगे।

– कटनी (म. प्र.)

लू के थपेड़

– उषा सोनी

सूर्यदेव उदय होने को है चारों ओर ठण्डी–ठण्डी हवा अपनी मधुर चाल से बह रही है। घने पेड़, शाखाओं और पत्तियाँ ठंडी हवा का आनंद ले रही हैं। शाखों पर घोंसलों में रहने वाले परिंदें भी भोजन की खोज में दूर तक जाने की तैयारी करने लगे। सभी अपने छोटे–छोटे बच्चों को समझा रहे थे कि हमारे जाने के बाद घोंसलों से बाहर नहीं आना यदि मन करें तो आसपास की घनी शाखों पर थोड़ी देर घूम लेना पर बाहर की ओर उड़ान मत भरना।

बच्चे हैरानी से अपने माता–पिता को देख रहे थे। माँ उन बच्चों की जिज्ञासा शांत करने लगी– ''देखो बेटे! अब तेज गर्मी और धूप के दिन है। तुम सभी अब भी बहुत छोटे हो। लू लपेट लग गई तो बहुत बीमार पड़ जाओगे। तुम सभी के बदन अभी बहुत कोमल हैं तुम्हें ठीक से अभी उड़ना भी नहीं आता। नीचे या धूप में कहीं मत जाना तुम्हारे पिताजी तुम्हें यहीं समझा रहे हैं।'' पर एक चंचल, शरारती–सा बच्चा बोल उठा– ''तो फिर उड़ना, बाहर जाना कैसे सीख पाएँगे?''

चिड़िया मुस्कुराने लगी। पिता ने कहा– ''अभी तुम्हें तीन–चार सप्ताह और रुकना पड़ेगा फिर तुम्हें उड़ना और बाहर कैसे निकलना है सब सिखा दूँगा। पर तुम भूलकर भी बाहर न निकलना।'' पिता ने सख्ती दिखाते हुए बच्चों से कहा।

बच्चे माता–पिता को जाते हुए देखने लगे। माँ ने बच्चों को प्यार से सहलाया और जल्दी आने का वादा करके पति के साथ उड़ गई।

माँ–पिताजी के जाने के बाद बच्चे अनमने उदास हो गये। छोटे–छोटे तो अपने भाई–बहन से लिपटकर सिसकने लगे। पेड़, शाखाएँ, पत्तियाँ भी बच्चों के दु:ख में जैसे शामिल हो गये पर चंचल हवा सब समझ चुकी थी कि ये छोटे बच्चे भला दिनभर घोंसलों में क्यों छिपकर बैठने लगे आज मैं इनके साथ खेलती रहूँगी।

हवा अपने पूरे जोश के साथ पेड़ और पत्तियों को हिलाने लगी। शरारती बच्चे जैसे इसी की प्रतीक्षा कर रहे थे। वो हँसते–हँसते छोटे पंखों के साथ और हरी घास पर खूब फूदकने लगे। कभी घास पर लौटते तो कभी अपने साथियों के साथ छोटी–छोटी उड़ान भरते।

एक–दूसरे को छेड़ते, प्यार जताते और आसपास के पेड़ों, खुले मैदानों, हरियाली को जी भर आश्चर्य से निहारते। सच पूछो तो आज उनकी खुशी, उत्साह में जैसे चार चाँद लग गये। इधर जैसे–जैसे दिन बढ़ रहा था उधर सूर्यदेव अपनी गर्मी और ताप

को बढ़ा रहे थे।

पर हवा फिर भी बच्चों के आसपास ही थी। इससे बच्चे इस परिवर्तन को समझ नहीं पाए। पर थोड़ी देर में वहीं ठंडी हवा कब गर्म होकर बहने लगी स्वयं हवा को भी पता न चला।

छोटे बच्चे अकुलाकर घास पर लोटने लगे पर उन्हें सब कुछ गर्म लगने लगा। वे उड़ने का प्रयत्न करते पर सूर्य के ताप से वे उठ नहीं पा रहे थे। जमीन और गर्म लगने लगी। अब तो वे जल ही जाएँगे।

किसी तरह हिम्मत करके वे पास की हरी झाड़ियों में दुबक गए। हरी घास और पत्तियों से उन्हें ठंडक मिली और थोड़ी राहत मिली। एक बच्चा जो घोंसले में सो रहा था उसने जब नीचे झाँका तो वह गर्म हवा के कारण घबरा गया। पेड़ की ऊँची शाख पर बैठकर वह अपनी भाषा में कुछ दूर पर बह रही नदी

को आवाज देने लगा।

''प्यारी नदी! मेरी बात सुनो ना! मेरे सभी नन्हें साथी गर्म हवा और लपट से जल रहे हैं क्या आप इस ओर आओगी? इस समय उन्हें आपकी बहुत आवश्यकता है। बेचारे घबरा रहे हैं आपके पास तो बहुत सारा पानी है। डुबकी लगाकर वे गर्मी से बच जाएँगे। आप आ जाओ ना।''

नदी को सारे बच्चों पर बड़ी दया आ गयी वह कैसे जाए उसकी दिशा तो आगे की ओर है। वैसे भी नदी में पानी का प्रवाह बहुत कम है।

''बच्चे! मत घबराओ फिलहाल मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर पाऊँगी, पर इतना तो निश्चित है कि थोड़ी देर में सूरज जब हल्की-सी झपकी लेगा ना बदली आकाश में आ जाएगी। उस समय तुम अपने साथियों से कहना वे पूरा जोर लगाकर अपने घोंसलों में पहुँच जाऐं। और हाँ उन्हें यदि प्यास लगे तो किसी मोटी टहनी वाले पौधे के तने में चोंच मारकर थोड़ा पानी पी सकते हैं। क्या बताऊँ मेरे आसपास गंदगी का ढेर है पेड़-पौधे नहीं के बराबर हैं जहाँ तुम रह रहे हो वहाँ थोड़ी बहुत हरियाली है और कुछ घने पेड़ भी हैं देखो आसपास के लोग शायद वहाँ पानी के कटोरे या बर्तन भी रखते होंगे। उन्हें अवश्य तुम देख लेना मेरे प्यारे बच्चो! ईश्वर तुम्हारी अवश्य सहायता करेंगे।''

बच्चों ने ये सारी बातें अपनी साथियों को अपनी भाषा में समझाई। बच्चे किसी तरह पानी के कटोरों के पास जाकर पानी-पीकर ऊपर उड़ गए सबने मिलकर कटोरों में पानी रखने वालों को धन्यवाद दिया। साथ ही प्यारी नदी के सहयोग एवं परामर्श के लिए दिल से आभार माना। उन्हें समझ में आ गया था कि माता-पिता की आज्ञा का पालन नहीं करने से कितना कष्ट सहन करना पड़ता है। अब आगे से वे ऐसी गलती कभी नहीं करेंगे।

- भोपाल (म. प्र.)

बाल साहित्य की सेनानी : मानवती आर्या

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'

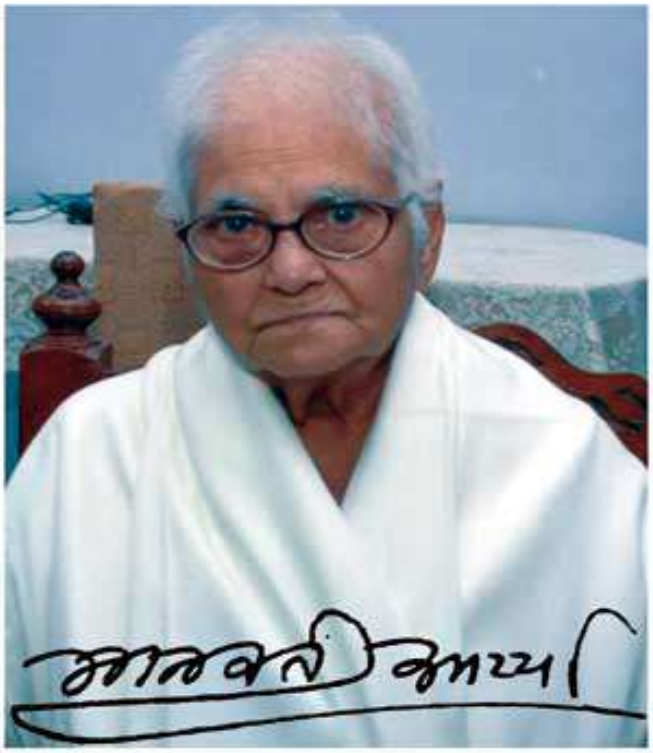

मानवती आर्या जी आजाद हिंद फौज में लेफ्टीनेंट रहीं। उन्होंने सौ वर्ष का सम्पूर्ण जीवन जिया और आजीवन सक्रिय रहीं। वे बाल साहित्य की भी सेनानी थीं। उन्होंने स्वयं भी उच्च कोटि का बाल साहित्य लिखा और नवलेखन को भी खूब प्रोत्साहित किया। उनके संपादन में प्रकाशित मासिक 'बाल दर्शन' बच्चों और बड़ों अर्थात् माता–पिता, अभिभावक, शिक्षक और बाल हित चिंतकों सभी की लोकप्रिय पत्रिका थी। राष्ट्र, साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनका अनुकरणीय योगदान है।

मूलत: भारतीय मानवती आर्या का जन्म तत्कालीन बर्मा (म्यांमार) के नगर मैक्टिला में ३० अक्टूबर १९२० को श्यामताप्रसाद पाण्डेय और छविरानी देवी की पुत्री के रूप में हुआ था। आजाद हिन्द फौज की महिला विभाग की सचिव और रानी झाँसी रेजिमेंट में लेफ्टिनेंट के रूप में वे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की सहयोगी रहीं। बरडांडा जिला फैजाबाद के मूल निवासी उनके पिता बर्मा के डाक विभाग में सेवारत थे। १९४६ तक बर्मा में सेवारत रहने के बाद वे पुन: भारत लौट आए। आर्या जी ने हाईस्कूल से लेकर एम. ए. (अँग्रेजी), बी. टी. की शिक्षा भारत आकर पूरी की। आश्चर्य की बात कि उन्होंने कभी किसी विद्यालय में हिंदी की शिक्षा प्राप्त नहीं की लेकिन अपने पिता से प्राप्त ज्ञान के चलते हिंदी पर उनका असाधारण अधिकार था। हिंदी का उनका लेख मोती जैसे अक्षरों–सा होता था। उन्हें मातृभाषा अवधी के अतिरिक्त बर्मी, बंगला, तमिल और जापानी भाषा का भी ज्ञान था।

बालसेवा और शिक्षण में उनकी विशेष अभिरुचि थी। उन्होंने बर्मा में दयानन्द प्राइमरी स्कूल, रंगून विश्वभारती अकादमी में भारतीय बच्चों को हिन्दी माध्यम से पढ़ाया। कानपुर के नर्सरी स्कूल और शीलिंग हाउस स्कूल में प्राचार्य के रूप में कार्य किया।

आचार्य कृष्ण विनायक फडके से प्रभावित होकर वे बाल सेवक बिरादरी संस्था से जुड़ीं। १९३८ से उन्होंने बालदर्शन की प्रधान संपादक के रूप में विशिष्ट प्रयोग किए। आपके सम्पादन काल में 'बालदर्शन' में न केवल बालहित चिंतन आधारित महत्वपूर्ण आलेख छपे, प्रतिष्ठित लेखकों का बाल साहित्य और उनके साक्षात्कार प्रकाशित हुए वरन बच्चों का लिखा साहित्य भी प्रमुखता से प्रकाशित किया गया। नवम्बर १९९१ में उन्होंने देवेन्द्र कुमार 'देवेश' और नागेश पाण्डेय 'संजय' के अतिथि संपादन में 'बाल किशोर रचनाकार विशेषांक' भी प्रकाशित किया था।

किशोरावस्था में बंगाली लेखक चंडीचरण सेन के उपंन्यास वीर बाला को पढ़कर उनमें साहित्य

सृजन की रुचि जाग उठी। उनकी पहली कविता १६ वर्ष की अवस्था में १९३६ में लाहौर से प्रकाशित 'शांति' मासिक में प्रकाशित हुई थी। मानवती जी ने रोचक और शिक्षाप्रद बाल साहित्य लिखा। उनकी प्रकाशित पुस्तकें हैं– दादी–अम्मा मुझे बताओ, दादी–अम्मा की सीख (बाल मुक्तक संग्रह), देश का भविष्य, भारत भक्त विदेशी महिलाएँ, बातचीत की कला। मराठी और अँग्रेजी में भी उनकी पुस्तकें प्रकाशित हुईं। बच्चों के लिए लिखे उनके मुक्तक और दोहे भी खूब चर्चित हुए।

जीवन के सौवें वर्ष में २० दिसम्बर २०१९ को कानपुर में उनका देहांत हुआ। उन्होंने अपना शरीर मेडिकल कॉलेज के छात्रों के अध्ययन हेतु दान कर दिया था।

बाल साहित्य सृजन हेतु उन्हें भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ ने सम्मानित किया।

आइए, पढ़ते हैं उनकी चर्चित रचनाएँ–

दादी अम्मा के दाँत

दादी अम्मा दाँत तुम्हारे,
बाहर क्यों आ जाते हैं?
पापा–मम्मी अपने दाँतों को
न अलग कर पाते हैं।
क्यों निकालती रोज सवेरे,
दाँतों को मुँह से बाहर?
ब्रश करना क्या नहीं जानती,
धोती हो बाहर लाकर।
बिना दाँत के ओंठ तुम्हारे,
अंदर को घुस जाते हैं।
बिना दाँत जब कुछ कहती हो,
समझ नहीं हम पाते हैं।

सुनो अधिक

मुँह है केवल एक तुम्हारे,
सुनने को हैं दो–दो कान।
सुनो अधिक, बोलो उससे कम,
सुनने से बढ़ता है ज्ञान।

किसी वस्तु को लघु मत समझो

अति लघु धूल कणों से ही तो
धरती बनी विशाल।
किसी वस्तु को लघु मत समझो
सीख मान लो लाल।
छोटी ईंटें बन जाती हैं,
बड़े भवन की नींव।
छोटी–छोटी रेखाओं से
बनते चित्र सजीव।
जुटकर श्रम करना सिखलाती,
चींटी अति लघु जीव।
चींटी से अच्छे गुण सीखो,
कर्मठ बनो अतीव।
मिनट मिनट जुड़ घण्टा बनता,
घण्टे जुड़ दिन एक।
योग दिनों का वर्ष बनाना
जीवन वर्ष अनेक।
सोचों, मिनट–मिनट ही तो है,
जीवन की बुनियाद।
इन मिनटों को व्यर्थ न खोना,
आयु न हो बरबाद।

माली

माली फूल उगाता है,
सुन्दर हार बनाता है।
रोज सुबह लाता गुलदस्ते,
हाथ जोड़ कर कहे नमस्ते।

दादी अम्मा नींद लगी

दादी अम्मा नींद लगी है,
मुझे बिछौने में लिटवाओ।
मेरे पास बैठ दादी माँ,
मेरी पीठ तनिक सहलाओ।
दादी अम्मा मुझे सुलाओ,
लोरी गाकर मुझे सुनाओ।
थपकी देकर थकन मिटाओ,
आँखों में निंदिया ले आओ।
दादी अम्मा चली न जाना,
कोई करना नहीं बहाना।
जब मैं सो जाऊँगा तो भी,
मेरे पास यहीं सो जाना।
आँख मूँद कर सो जाऊँगा,
सपनों में मैं खो जाऊँगा।
परी मुझे लौटा लाएगी,
सुबह सबेरे जग जाऊँगा।

शत्रु नाश का अर्थ

शत्रु–नाश का काम सहज है,
अगर समझ में आ जाए।
जग में सबको मित्र बना लो,
शत्रु न कोई रह जाए।

कथनी करनी

जो बोलो करके दिखलाओ,
व्यर्थ न अपना करो बखान।
कथनी–करनी हो समान तो,
सबसे पाओगे सम्मान।

बड़ा कौन

रूप–रंग, आकार–वेश से,
कोई बड़ा नहीं होता है।
कर्म बनाता बड़ा मनुज को,
मानव का गुण सज्जनता है।

बिल्ली

मैंने बिल्ली पानी एक
चूहे भागे उसको देख।
चूहे अब नुकसान न करते,
बिल्ली रानी से वे डरते।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : interview@suryafoundation.org Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना और उन्हें समाजसेवा के काम में जोड़ना।

इन्टरव्यू में चयन हो जाने के बाद सूर्या साधना स्थली कैंपस में छः माह की ट्रेनिंग दी जाएगी। उसके बाद एक साल के लिए On Job Training (OJT) रहेगी।

संघ एवं समिति के संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम युवक एवं युवतियों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में इंटरव्यू होगा–

Post	Experience	Age Between	6 months Initial Training + 1 year OJT	After Training CTC
CA	IPCC / MTER	18-25	3 - 4 L Per Annum	As per Performance
	Fresher	22-30	5 - 6 L Per Annum	- do -
	Experienced (upto 5 years)	25-35	6 - 8 L Per Annum	- do -
	Experienced (above 5 years)	25-35	9 - 12 L Per Annum	-do -
Engineers, Fresher & Experienced	B.Tech (IIT)	22-30	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	B.Tech (NIT)	22-30	4.5 - 6 L Per Annum	- do -
	B.Tech (Other Institutes)	22-30	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	M.Tech (IIT)	22-30	8.5 - 10 L Per Annum	- do -
	M.Tech (NIT)	22-30	5.5 - 7 L Per Annum	- do -
	M.Tech (Other Institutes)	22-30	3.6 - 4 L Per Annum	- do -
MBA	MBA (IIT + IIM)	22-30	15 L + Per Annum	- do -
	MBA (IIM)	22-30	12 - 15 L Per Annum	- do -
	MBA (Other Institutes)	22-30	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
Post Graduate & Graduate	MCA, B.Ed., M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A. *(Freshers / Experience) Ph.D. **	18-25	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	Mass Communication (Media) - PG	18-28	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store	18-28	3 L Per Annum	- do -
	B.Sc. BCA, BBA, BA, B.Com (Pursuing / Passed)	18-25	1.4 - 1.8 L Per Annum	- do -
	Diploma		1.8 L Per Annum	- do -
Law	LLM	22-28	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	LLB	22-28	2.4 - 3 L Per Annum	- do -

- उपरोक्त Categories में अधिक प्रतिभाशाली युवाओं को इससे भी अधिक वेतन दे सकते हैं।
- *** Ph.D. candidates भी आवेदन करें। Salary interview के दौरान तय होगी।**
- **योग शिक्षक, प्राकृतिक चिकित्सक / उपचारक, Karate Teacher, Music Teacher, Stenographer (Hindi & English), Script Writer (Hindi & English), Data Operator & Clerk, Editor & Co-Editor, नाट्य, संगीत एवं नृत्यकला के विसारद भी आवेदन करें। वेतन योग्यता अनुसार दिया जाएगा।**

- **Graduate Management Trainee (GMT)**

योग्यता–2024 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास करने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) में भेजा जायेगा। OJT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA या MCA करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी, साथ ही 5,000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ 11वीं में 8000/-, 12वीं में 10,000/- Graduation Ist year में 12,000/-, IInd Year में 15,000/-, IIIrd Year में 18,000/-, MBA/MCA Ist Year में 22,000/-, MBA/MCA IInd Year में 27,000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 40000/- और Work Performance के आधार पर प्रतिमाह वेतन / मानधन इससे अधिक होगा।

आवेदन हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें। विस्तृत बायोडाटा के साथ-साथ यदि आपने NCC / NSS / संघ शिक्षा वर्ग / प्राथमिक शिक्षा वर्ग / शीत शिविर / PDC आदि कोई शिक्षण किया है तो उल्लेख करें। सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों में संपर्क रहा है तो कब और कैसे। सूर्या परिवार में कोई परिचित हों तो उनका नाम, विभाग भी जरूर लिखें। पढ़ाई का विवरण लिखते हुए, Mark sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें।

कृपया विस्तारपूर्वक बायोडाटा के साथ निम्नलिखित पते पर अपना CV / आवेदन भेजें। CV / आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 | Email : interview@suryafoundation.org

आवेदन की अंतिम तिथि : 31 मई 2024

गप्पू और ढोल

– पवन चौहान

एक लड़का था गप्पू! वह बहुत समझदार, चतुर और हिम्मत वाला। लोहड़ी का त्योहार आ रहा था। नानी ने उन्हें बुलाया था। घरवाले किसी अति आवश्यक कार्य के चलते जा नहीं सकते थे। ऐसे में गप्पू बोला– ''मैं जा आता हूँ! वैसे भी नानी के घर गए हुए मुझे बहुत दिन हो गए हैं।''

नानी का घर बहुत दूर था। बीच में सुनसान रास्ता था। साथ में था घना जंगल और खतरनाक जानवरों का डर। इसलिए माँ ने अकेले जाने से उसको मना कर दी। लेकिन जब गप्पू नहीं माना तो माँ ने उसे समझा–बुझाकर भेज दिया।

बस फिर क्या था! गप्पू मस्ती में सुबह ही गीत–गाता हुआ चल पड़ा नानी के घर। रास्ते में पानी को घड़ा उठाए चाची मिली। चाची ने पूछा, ''कहाँ जा रहे हो गप्पू?''

खुशी से बोला– ''नानी के घर।''

''ध्यान से जाना।'' चाची ने कहा।

''जी चाची!'' कहकर वह आगे निकल गया।

पगडंडी से होता हुआ अब वह एक घने, सुनसान जंगल में पहुँच गया था। उसे थोड़ा डर भी लग रहा था। लेकिन वह मस्ती में चलता रहा। अभी वह थोड़ी दूर ही गया था कि उसे एक गीदड़ मिल गया। गीदड़ उसका रास्ता रोककर बोला– ''आज तो मजा आ गया। सुबह–सुबह ही मजेदार खाना मिल गया है।''

गीदड़ को देखकर गप्पू डर गया। लेकिन वह होशियार था। बोला, ''अरे! गीदड़ चाचा! तुम अभी मुझे जाने दो। देखो मैं कितना कमजोर हूँ। तुम्हें मजा नहीं आएगा। मैं अभी नानी के घर जा रहा हूँ। वहाँ दूध, घी, खिचड़ी खाऊँगा। मोटा–ताजा होकर आऊँगा। तब तुम खा लेना। तब तुम्हें मजा आएगा।''

गीदड़ थोड़ा सोचा। उसे गप्पू का सुझाव अच्छा लगा। वह बोला– ''ठीक है लेकिन वापसी पर सीधे मेरे पास ही आना। कहीं इधर–उधर मत जाना।''

''जी चाचा!'' कहकर गप्पू फटाफट वहाँ से खिसक गया।

वह इस बार काफी आगे निकल आया था। उसे अब थकान होने लगी थी। वह जैसे ही जमीन पर बैठा तो वहाँ अचानक शेर पहुँच गया। गप्पू बहुत भयभीत हो गया। लेकिन शेर की आँखें खुशी से चमक रही थीं। वह बोला– ''आज तो मजा ही आ गया। मेरा पूरा परिवार मिलकर खाएगा तुम्हें।''

गप्पू अबकी बार थोड़ा संभला। डर को परे रखते हुए हिम्मत करके बोला– ''शेर मामा! तुम भी

कमाल करते हो। मुझ जैसे पतले को खाकर तुम्हारे परिवार को आनंद नहीं आएगा। तुम्हें केवल हड्डियाँ ही चुभेंगी। मैं नानी के घर जा रहा हूँ। वहाँ दूध, घी, खिचड़ी खाऊँगा। मोटा-ताजा होकर आऊँगा। तब तुम मुझे खा लेना। तुम्हें बहुत आनन्द आएगा।''

शेर को गप्पू की बात जंच गई। उसने उसे छोड़ दिया।

गप्पू ईश्वर का धन्यवाद मनाता हुआ आगे निकल गया। घने जंगल वाला रास्ता अभी थोड़ा ही बचा था। अचानक उसे बड़े-बड़े दाँत वाली चुड़ैल ने रोक दिया। वह बोली- ''मुझे बहुत भूख लगी थी। अच्छा हुआ मुझे अधिक भटकना नहीं पड़ा। मेरी चिंता ही समाप्त हो गई। अब मैं घर जाकर तुझे पकाकर खाऊँगी। इस कोमल शरीर को खाकर बहुत आनंद आएगा।''

चुड़ैल की बातों से गप्पू की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। वह थर-थर काँपने लगा। उसने दूध, घी, खिचड़ी वाली बात कही लेकिन वह नहीं मानी। उसने उसे अपने 'खालहड्डू' (जानवरों की खाल से बना थैला) में डाला और उठाकर चल पड़ी।

रास्ते में एक तरफ किसान अपने खेत जोत रहा था। अचानक चुड़ैल का पेट खराब होने लगा। उसने खालहड्डू को खेत के पास एक बड़ी चट्टान पर रख दिया और शौच के लिए थोड़ा आगे निकल गई। गप्पू सहायता के लिए पुकारने लगा। किसान ने जैसे ही गप्पू की आवाज सुनी तो वह दौड़ा चला आया। खालहड्डू से गप्पू को निकाला और उसमें उसी भार के 'भीकड़' (जोते खेत की मिट्टी के ढेले) भर दिए।

चुड़ैल वापस आई। उसने खालहड्डू उठाया और चल पड़ी। उसे वे सूखे मिट्टी के ढेले पीठ में जब चुभने लगे तो बोली-''कोई बात नहीं तू अपनी हड्डियाँ जितनी चाहे चुभा ले। सबसे पहले मैं इन्हें ही चबाऊँगी।''

इस प्रकार से गप्पू चुड़ैल से भी बच गया। संध्या होते-होते वह नानी के घर पहुँच चुका था। नानी गप्पू को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। गप्पू नानी के घर कई दिनों तक रहा। नानी ने उसे खूब खिलाया-पिलाया। उसका खूब आतिथ्य किया। उसने नानी के घर खूब मस्तियाँ की और ननिहाल वालों मित्रों के साथ खूब खेला भी।

उसे नानी के घर रहते हुए काफी दिन बीत गए थे। अब उसे घर वापस जाना था। उसने नानी से घर वापस जाने की बात कही और पिछली सारी घटना भी कह सुनाई। नानी बहुत बूढ़ी थी। वह साथ नहीं जा सकती थीं। लेकिन नानी थी बहुत तेज! नानी ने गप्पू को एक युक्ति सुझाई।

नानी ने गप्पू को एक बड़े से ढोल में बंद दिया। उसकी कमर में छुण-छुण बांध दिए। ढोल में हल्के-हल्के छेट भी कर दिए। फिर ढोल को एक हल्की-सी

ढलान से घर की ओर लुढ़का दिया।

ढोल में बंद गप्पू लुढ़कता जाता और उसे अंदर से बजाता जाता। छुण-छुणुओं की आवाज अपना ही संगीत पैदा कर रही थी।

उधर कई दिनों से उसके शिकारी उसकी राह तक रहे थे। सबसे पहले चुड़ैल ने ढोलक को रोका। वह बहुत गुस्स में थी। उसने ढोल से पूछा- ''ढोल! तुम कहाँ से आ रहे हो?''

गप्पू आवाज बदलकर बोला- ''दूर पहाड़ी से आ रहा हूँ।''

''क्या तुमने किसी छोटे लड़के को उसकी नानी के घर से आते हुए देखा?''

ढोल के अंदर से आवाज आई-

''मैं बजता रहा, बजाता रहा
अपने रास्ते आता रहा
मुझे नहीं पता, क्या बोले है तू
चल मेरे ढोला ढमक ढूँ
ढमक ढूँ भाई, ढमक ढूँ।''

चुड़ैल बहुत उदास हो गई। उसने गुस्से में ढोलक को आगे धकेल दिया। आगे गप्पू की प्रतीक्षा में शेर बैठा था। उसने भी ढोल को रोका और गप्पू का पता पूछा। ढोलक ने फिर अपनी बात कही-

''मैं बजता रहा, बजाता रहा
दूर पहाड़ से आता रहा
नहीं जानता
कौन है गप्पू, कौन है तू
चल मेरे ढोला ढमक ढूँ
ढमक ढूँ भाई, ढमक ढूँ।''

यह कहकर वह वहाँ से भी निकल गया। शेर मायूस-सा होकर उसे जाते देखता रहा।

गीदड़ भी रोज गप्पू का रास्ता देखता था। रोज किसी न किसी से उसके बारे में पूछता रहता। जब यहाँ से भी ढोल बजते-बजते, घुंघरुओं की आवाज करते हुए निकला तो गीदड़ ने भी गप्पू का पता पूछा। लेकिन ढोल के भीतर से उसे वही एक गीत सुनाई दिया। गीदड़ के अरमानों पर आज भी पानी फिर गया था। उसने भी गुस्से से ढोल को आगे धकेल दिया।

कुछ ही समय बाद गप्पू ढोल में लूढ़कता, उसे बजाता, गीत गाता हुआ अपने घर सुरक्षित पहुँच गया।

- मण्डी (हि. प्र.)

विशेषांक सूचना

प्रिय पाठको!

देवपुत्र का जून अंक **छत्रपति शिवाजी महाराज** के राज्यारोहण के ३५० वर्ष पूर्ण होने के विशेष गौरव प्रसंग पर एक विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। ततसंबंधित रचनाएँ चयनित की जा चुकी हैं। अत: आप सभी इस अंक की प्रतीक्षा करें और प्राप्त होने पर आनंद लें-

- संपादक

फिर वहीं

चित्रकथा-
ओह! कोई डूब रहा है, बचाना चाहिए..
बचाओ!!
बचाओ
..चलो रस्सी भी पास ही पड़ी मिल गई..
सुनो भाई, मैं रस्सी फेंक रहा हूं.. कसकर पकड़ लेना..मैं तुम्हें ऊपर खींच लूंगा..
अरे!!? थानेदार साब् आप!
..सलाम साब..
छपाक

सावरकर थे बड़े महान

– डॉ. राकेश चक्र

भारत माता के सेनानी
सावरकर थे बड़े महान।
वीर, साहसी देशभक्त को
याद कर रहा हिंदुस्थान।।

क्रांति ज्वाल को धधकाया था
ब्रिटिश हुकूमत काल बने।
अत्याचारी शासन के वे
आजीवन जंजाल बने।।

जीवन अर्पित किया राष्ट्र हित
रोम-रोम गाता है गान।
भारत माता के सेनानी
सावरकर थे बड़े महान।।

काल कोठरी रहे देश हित
कोल्हू का वे बैल बने।
अनगिन अत्याचार सहे थे
बंदीगृह की जेल बने।।

रहे सत्य पर अडिग सदा ही
रखा देश को सादर मान।
भारत माता के सेनानी
सावरकर थे बड़े महान।।

प्रथम देश की सत्ता ने भी
कहाँ उन्हें सम्मान दिया।
लाल बहादुर शास्त्री जी ने
आदर से गुणगान किया।।

समझ न पाए उन्हें विरोधी
उल्टा-सीधा किया बखान।
भारत माता के सेनानी
सावरकर थे बड़े महान।।

त्याग, तपी, संकल्प अटल थे
सृजन, साधना अविरामी।
रहे तपस्वी संघर्षों के
अनगिन के थे पथगामी।।

अभिनंदन, वंदन है उनको
नतमस्तक हैं, कर सम्मान।
भारत माता के सेनानी
सावरकर थे बड़े महान।।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

नकल से सावधान!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

छोटी कहानी

सफेद परी

– टीकम चन्दर ढोडरिया

बात बहुत पुरानी है। कृष्णा जब कक्षा पाँचवीं में पढ़ती थी। छोटा–सा शहर था उनका। चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ। पूरे शहर में एक ही माध्यमिक विद्यालय था। जिसमें दसवीं कक्षा तक पढ़ाई होती थी।

शहर में लाइट भी नहीं आई थी। रात में चिमनी अथवा लालटेन जलाये जाते थे। बच्चे उनके प्रकाश में ही अपनी पढ़ाई करते थे।

कृष्णा को गणित विषय से डर लगता था। अन्य विषयों में उसके सबसे अधिक अंक आते थे, पर गणित में कम अंक आने से कक्षा में प्रथम नहीं आ पाती थी। यह बात उसे रह–रहकर परेशान करती रहती थी। वार्षिक परीक्षाएँ निकट ही थी। एक महीना ही तो रह गया था परीक्षा का।

एक दिन उसकी मौसी उनके घर आईं। वह उसकी माँ से छोटी थी। बहुत प्यार करती थी वह कृष्णा से। जब तक वह घर पर रहती कृष्णा उसके आस–पास ही रहती। रात को उसी के पास सोती थी। मौसी उसे बहुत ही मनोरंजक कहानियाँ सुनाया करती थीं। गर्मी के दिन होने से छत पर ही बिस्तर लगा लिये थे। एक दिन मौसी ने कृष्णा से पढ़ाई के बारे में पूछा, तो उसने बताया– ''मौसी गणित में पता नहीं क्यों मेरा मन नहीं लगता... प्रश्न हल करने लगती हूँ तो नींद सी आने लगती है।'' गणित के कारण ही मैं कक्षा में प्रथम नहीं आ पाती।''

''अरे! इसमें डरने की क्या बात है... मैं जब पढ़ती थी तब मेरा भी यह ही हाल था।'' मौसी ने कहा। ''फिर मौसी तुमने क्या किया... तुम तो बहुत पढ़ी हो।'' कृष्णा ने पूछा।

''एक रात मुझे पढ़ते–पढ़ते ही जाने कब नींद आ गई। पता ही नहीं रहा। फिर मेरे सपने में एक परी आई। बहुत ही सुन्दर थी वह... सफेद कपड़ों में बहुत ही सुन्दर लग रही थी। उसने कहा मैं तेरी पुस्तक में यह सफेद पंख रख देती हूँ। इसे किसी को मत बताना.... और कल से मन लगाकर खूब अध्ययन

करना। सब प्रश्न हल होते चले जाएँगें।

मैंने ऐसा ही किया और जानती हो फिर क्या हुआ?'' ''क्या हुआ मौसी?'' कृष्णा ने पूछा।

''उस वर्ष कक्षा में मैं प्रथम आई थी। फिर उस परी ने उपहार में मुझे मिठाई का बहुत बड़ा डिब्बा और बहुत सारे खिलौने भी भेजे थे।'' ''सोते समय तू भी उसे स्मरण कर लेना शायद तेरी भी वह कुछ सहायता कर दे।'' मौसी ने कहा। दोनों बातें करते हुए सो गई। मौसी को सुबह की ट्रेन से अपने घर जाना था।

कृष्णा भी तैयार होकर अपने विद्यालय चली गई। शाला में गणित की पुस्तक खोली तो उसमें एक सुन्दर छोटा–सा सफेद रंग का पंख रखा हुआ था। वह आश्चर्य चकित रह गयी। सोचने लगी शायद रात में सफेद परी रखकर चली गई हो।

इसके बाद वह मन लगाकर पढ़ने लगी। उसे कक्षा में प्रथम आकर परी से उपहार जो लेना था।

परीक्षा का परिणाम आया... कृष्णा कक्षा में प्रथम आई थी। वह बहुत प्रसन्न थी।

एक दिन वह अपनी सहेली के घर गई हुई थी। शाम को घर आयी तो उसकी माँ ने कहा– ''कृष्णा! देखो तो किसी ने तेरे लिए यह उपहार भेजा है।''

बहुत बड़ा पैकेट था। कृष्णा ने उसे खोलकर देखा तो उसमें बहुत सारी मिठाईयाँ, खिलौने और कपड़े रखे हुए थे। कृष्णा की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसमें एक पत्र भी रखा था। शायद परी ने भेजा हो। कृष्णा पत्र पढ़ने लगी। पत्र के अंत में नीचे लिखा हुआ था..... ..... **सफेद परी (तुम्हारी मौसी)**

– छबड़ा (राजस्थान)

नायक निर्भय सिंह

निर्भयसिंह राजस्थान के झालावाड़ जिले में १ मई १९५८ को श्री नन्दनसिंह के घर जन्मे थे। वे अपनी माता श्रीमती बसंत कुँवर के पाँच पुत्र और चा बहिनों में आठवीं संतान थे। निर्भयसिंह झालावाड़ से नवीं कक्षा उत्तीर्ण करके कुमाऊँ रेजीमेन्ट में प्रवेश पा गए। रंगरूट ट्रेनिंग के बाद वे १५ कुमाऊँ रेजीमेन्ट में भर्ती पा गए।

उनकी साहस कथा का उत्कर्ष पंजाब में उग्रवाद के दमन हेतु 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' को अंजाम देते हुए प्रकट हुआ। वे लाइट मशीनगन टुकड़ी के कमाण्डर के रूप में ६ जून १९८४ को स्वर्ण मंदिर को उग्रवाद की काली छाया से मुक्त कराने आगे बढ़े।

भारी गोलाबारी अत्यन्त भयानक हो चली थी। जान माल गँवाकर भी सफलता सामने नहीं दिख पा रही थी। कंपनी कमाण्डर अकेले आगे बढ़ गए।

नायक निर्भयसिंह अपने नाम को पूर्णत: सार्थक करते हुए सिंह की भाँति निर्भयता से नायकत्व का दायित्व निबाहने अपने सहायक के साथ आगे बढ़ गए। भवन के आधार पर पहुँचकर वे कंपनी कमाण्डर को कवर फायर देने लगे। अटाटूट फायरिंग में चट्टान जैसे अड़े निर्भयसिंह के इस साहस व बुद्धिमानी भरे सहयोग से कंपनी कमाण्डर श्री अकाल तख्त साहिब की ओर बढ़ सके। इधर नायक की दृष्टि गड्ढे में छुपे उग्रवादी पर पड़ी जो वहाँ से फायरिंग कर रहा था। नायक ने एक ग्रेनेड फेंक कर उसके परखच्चे उड़ा दिए। गड्ढे के सारे उग्रवादी यमलोक चले लेकिन अनेक गोलियों को अपनी देह में समाए नायक भी स्वर्ग को चल पड़े। अशोकचक्र उनके अदम्य साहस का प्रतीक बनकर परिवार के लिए गौरव स्मृति बना।

घर का वैद्य

शहर से पत्र आया

– उषा भण्डारी

अगले दिन दोपहर को शहर से पत्र आया कि बच्चे दो दिन बाद शहर आ जाएँ। गर्मी की छुट्टियों में कहीं घूमने जाने का तय हुआ था। बच्चों को घूमने जाने की खुशी थी। पर दुःख भी बहुत था। सारा उपचार जाने बिना उनको शहर जाना पड़ेगा।

बच्चों ने यह बात दादाजी को बताई। दादाजी ने कहा– कोई बात नहीं, अगली बार आओगे तो बाकि उपचार सीख लेना। आज तुम जिन बीमारियों के उपचार के बारे में जानना चाहोगे, वह बता दूँगा।

मुँहासों का उपचार

सुनीता ने कहा– दादाजी मुँहासे का उपचार बताइये? दादाजी ने कहा– बादाम की चार गीरी सुबह पानी में भिगो दें। उनको शाम को बकरी या भैंस के दूध में घिसकर मुँह पर लेप कर लें। लेप रातभर लगा रहने दें। सुबह चेहरे को ठंडे पानी से धो डालें। बीस दिन तक ऐसा करने से चेहरे का रंग भी निखर जाता है। मुँहासे भी मिट जाते हैं।

सुनीता ने कहा– दादाजी ऐसा उपाय बताइये जिससे मुँहासे बार–बार होना बंद हो जाएँ। दादाजी ने कहा– मसूर की दाल को बारीक पीस लो। फिर उसे दूध में मिलाकर खूब देर तक फेटों। इसे मुँह पर लगाकर आधे घंटे बाद रगड़कर मुँह धो लो। ऐसा सुबह शाम आठ दिन तक करें। ऐसा करने से मुँहासे मिट जाएँगें और फिर कभी नहीं होंगे।

घाव कैसे ठीक करें

राजू ने पूछा– दादाजी चोट लगने पर क्या करना चाहिए?

दादाजी ने बताया– यदि घाव से खून निकल रहा हो, तो एक छोटा कपड़ा लें। उसे मिट्टी के तेल में तर कर लें और घाव के ऊपर बाँध दें। खून उसी समय बंद हो जाएगा। दर्द भी नहीं होगा। दो–चार दिन तक उस कपड़े पर मिट्टी का तेल डालकर उसे गीला करते रहें। घाव पूरी तरह ठीक हो जाएगा।

दादाजी ने एक ओर उपाय बताया– कटी हुई जगह पर हल्दी का चूरन भरकर बाँध दें। इससे भी घाव से खून बहना बंद हो जाएगा और घाव ठीक हो जाएगा। राजू ने पूछा– दादाजी हल्दी खाने से भी फायदा होता है?

दादाजी ने कहा– हाँ, एक छोटा चम्मच हल्दी गरम–गरम दूध के साथ सुबह शाम फाँक लें। इससे दर्द और सूजन में आराम मिलता है। तथा घाव भी कम समय में भर जाता है।

नींद न आए तो क्या करें

रोहू ने कहा– दादाजी पिताजी को कभी–कभी नींद नहीं आती है। और डॉक्टर कहते हैं नींद की गोली बार–बार लेने से लत पड़ जाती है। पिताजी को क्या करना चाहिए? दादाजी ने कहा– बढ़िया नींद के लिए आवश्यक है चिंता नहीं करना। हाँ जायफल को घी में घीसकर पलकों पर लगाने से नींद उसी समय आ जाती है। दादाजी ने एक और उपाय बताते हुए कहा– आठ ग्राम पिपलामूल का चूरन गुड़ में मिलाकर खाने से नींद बढ़िया आती है। ऐसा आठ–दस दिन तक करना चाहिए।

सब रोगों की एक औषधि

राजू ने कहा– दादाजी! आज सारी रात जागकर हमें उपचार के बारे में बताइये।

दादाजी ने कहा– तुम सभी को एक ऐसा उपाय बताने जा रहा हूँ। जिससे केंसर जैसी बीमारी भी ठीक हो जाती है। सभी अचरज में पड़ गये। सबने एक साथ कहा– दादाजी! हमें वह उपाय अवश्य बताइये।

दादाजी ने कहा– सुनो, गेहूँ के पौधों का रस पीने से सभी प्रकार के रोग ठीक हो जाते हैं। इस रस

को पीने से शरीर में रोगों से लड़ने की ताकत बढ़ती है।

सुनीता ने पूछा– दादाजी! गेहूँ के पौधों का रस कैसे बनता है?

दादाजी ने बताया– दस बारह मिट्टी के गमलों में बढ़िया मिट्टी भर दें। अच्छे प्रकार के गेहूँ के दानें लें। उनको पानी में भिगोकर कपड़े में बाँध दें। चौबीस घंटे बाद उनको गमलों में बो दें। गमलों को छायादार स्थान में रखें। गमलों में पानी डालते रहें। सात–आठ दिन में गेहूँ के पौधे सात–आठ इंच लंबे हो जाते हैं। ऐसे तीस–चालीस पौधों को जड़ के पास से काट लें। इन पौधों को धोकर सिलबट्टे पर पीस लें और उनको पतले कपड़े में डालकर रस निचोड़ लें। इस रस को गेहूँ का रस कहते हैं।

सुनीता ने पूछा– दादाजी! इस रस का क्या करना चाहिए? दादाजी ने कहा– इस रस को ताजा–ताजा पीना चाहिए। निरोगी आदमी को आधा और रोगी को डेढ़ गिलास रस पिलाना चाहिए। रस में कुछ भी नहीं मिलाना चाहिए। रस को पीने से कोई नुकसान तो नहीं होता?

दादाजी ने कहा– नहीं इसे पीने से कोई नुकसान तो नहीं होता, पर शुरू–शुरू में किसी–किसी को उलटी–दस्त होने लगते हैं या सर्दी जैसा लगता है पर ऐसा होने पर घबराएँ नहीं।

सुनीता ने पूछा– गेहूँ का रस कितने दिन तक लेना चाहिए? दादाजी ने कहा– दो तीन माह तक सुबह शाम ताजा गेहूँ का रस पीने से रोगी एकदम ठीक हो जाता है। हर रोज गेहूँ के कुछ अँकुरित दाने गमले में बोते रहने से ही गेहूँ को रस रोज मिल सकता है।

इतना कहकर दादाजी ने कहा– अब जाकर अपने नए साथियों से मिल आओ। फिर आकर जाने की तैयारी करना। क्योंकि शिवनगर के लिए बस सुबह पाँच बजे निकलती है। सभी बच्चे खुशी–खुशी गाँव के अपने नए साथियों से मिलने चले गए।

– इन्दौर (म. प्र.)

गोपाल का श्राद्ध

– तपेश भौमिक

गोपाल कमाता खूब था पर पेटू किस्म का होने के कारण महीने के अंत में उसे प्राय: महाजन से उधार में पैसे लेने पड़ते थे। उधार लेकर वह यह बिलकुल भूल जाता था कि पैसे चुकाने भी पड़ेंगे। वह इस चिंता में रहता कि महाराज से कोई पुरस्कार मिल जाए तो सारे उधार एक ही बार में चुका देगा। इस प्रकार देर हो जाया करती थी। उधर महाजन खरी–खोटी सुनाने लगते तो वह गोल–मोल बातें करके उनसे अपना पिंड छुड़ा लेता था।

ऐसे ही एकबार एक महाजन भी अड़ गया कि वह गोपाल से सूद समेत पैसों की वसूली करके ही दम लेगा। उसने गोपाल से सूद समेत पैसे माँगे तो गोपाल भी आजकल, आजकल करके उसे फुसलाने लगा। एक दिन उस महाजन से रहा नहीं गया। उसने क्रोध में आकर धमकी देते हुए कहा– ''गोपाल! तुमने यदि कल तक पैसे नहीं चुकाये तो तुम्हारा श्राद्ध करके ही दम लूँगा।''

गोपाल ने भोलेपन से कहा– ''आप भी बड़े कमाल के आदमी हैं जी! उधार देकर तो पैसे वसूल नहीं पा रहे हो, अब ऊपर से श्राद्ध करोगे तो उसके पैसे तो मैं स्वर्ग से लौटाने नहीं आऊँगा।'' इस पर महाजन ठठा कर हँस पड़ा। उसका क्रोध शांत हो गया और बड़बड़ाता हुआ उल्टे पाँव लौट गया।

दो दिन बाद महाजन उसे रास्ते में मिल गया। उसने पैसे माँगे तो गोपाल ने फिर टाल–मटोल वाली बात की। इस पर महाजन ने क्रोधित होते हुए कहा– ''तू भांड में जा।'' अब गोपाल ने कहा– ''भांड तो मैं पहले से ही हूँ। इसीलिए तो लोग मुझे गोपाल भांड कहते हैं।'' इस दिन भी महाजन अपनी हँसी नहीं रोक पाया। वह अगली बार पूरी तैयारी के साथ आने के दाँव–पेंच कसता हुआ आगे बढ़ गया।

तीसरी बार फिर महाजन ने उसे खूब खरी–खोटी सुनाई तो वह कुछ दिन और सब्र करने को कहा। अबकी बार महाजन ने कहा– ''तू नरक में जा।'' इस पर गोपाल ने कहा– ''आप अनुभवी हैं। आपको नरक का रास्ता ज्ञात ही होगा, आप तो अपने लिए नरक जाने का रास्ता हर दिन साफ करते रहते हैं। अब आप ही बताएँ कि मैं नरक कैसे जा सकता हूँ?'' यह सुनकर महाजन ने अपना सिर पीट लिया।

– गुड़ियाहाटी, कूचबिहार
(पश्चिम बंगाल)

पाण्डवों का एकचक्र नगरी में प्रवेश

– मोहनलाल जोशी

पाण्डव लाक्षागृह में भस्म होने से बच गये। वे जंगल के रास्ते बहुत दूर चले गये। हस्तिनापुर की सीमा समाप्त हो गयी। अब उन्हें दुर्योधन का भय नहीं था। भीम दुर्योधन का वध कर सकता था। परन्तु युधिष्ठिर जी बहुत ही धर्मात्मा थे। वे भीम को ऐसा करने नहीं देते थे। युधिष्ठिर जी ने दुर्योधन को क्षमा कर दिया। पाण्डव और माता कुन्ती एक नगर में पहुँचे। इस नगर का नाम एकचक्र नगरी था। सभी ने वेश बदल लिया। उन्होंने ब्राह्मणों का वेश बना लिया।

पाण्डवों ने एकचक्र नगरी में एक ब्राह्मण के घर आश्रय लिया। वे पूजा–पाठ करते थे। नगर में उन्हें कोई पहचानता नहीं था। वे कुछ समय उस ब्राह्मण के घर पर ही रहे। कभी–कभी व्यासजी उनसे मिलने आते थे। वे पाण्डवों को उचित मार्गदर्शन करते थे।

बकासुर वध

एकचक्र नगरी में एक राक्षस रहता था। उसका नाम बकासुर था। उसे प्रतिदिन खाने के लिए एक मनुष्य और बैलगाड़ी भरकर खाद्य सामग्री की आवश्यकता पड़ती थी। गाँव वाले बारी–बारी से उसको खाना पहुँचाते थे। एक दिन उस ब्राह्मण की बारी आई, जहाँ पाण्डव ठहरे हुए थे। ब्राह्मण का परिवार जोर–जोर से विलाप कर रहा था। कुन्ती ने घर के अन्दर जाकर पूछा– ''आप सभी को क्या दुःख है?'' ब्राह्मण ने कहा– ''बकासुर को भोजन सामग्री पहुँचाने की आज हमारी बारी है। बकासुर हमारे एक सदस्य को खा जाएगा।''

माता कुन्ती ने कहा– ''मेरा पुत्र भीम भोजन समाग्री लेकर जाएगा। उसने बहुत से बड़े–बड़े राक्षसों का वध किया है।'' भीम भोजन सामग्री लेकर जंगल में बनी बकासुर की गुफा तक गया। बैल गाड़ी में रखी हुई खाद्य सामग्री भीम को खाते देखकर बकासुर को बहुत क्रोध आया। उसने भीम से युद्ध किया। भीम ने उसे युद्ध में पराजित कर उसका वध कर दिया।

– बाड़मेर (राजस्थान)

मेहनत का फल

– तारादत्त जोशी

एक बार मनुष्य की करतूतों से नाराज होकर वर्षा, सूरज को संदेश भेजकर बोली– ''देखो भैया! मैं धरती पर बरस कर तरह–तरह के पेड़–पौधे उगाकर धरती को हरा–भरा और सुंदर बनाती हूँ। किन्तु मनुष्य दिन–रात अपने लाभ के लिए पेड़–पौधों को काटकर मेरे परिश्रम पर पानी फेर रहा है। और तो और धरती में सीमेंट बिछाकर मुझे धरती के अंदर भी नहीं जाने दे रहा है। जब किसी को मेरे परिश्रम की परवाह ही नहीं है तो मैं भी अब धरती पर नहीं जाऊँगी। यह बार–बार समुद्र से आसमान, आसमान से धरती का चक्कर मैं क्यों काटूँ भला?''

सूरज ने वर्षा को समझाना चाहा, किन्तु वह क्रोध से लाल–पीली होकर धरती में लौटते हुए सागर के अंदर जाकर सो गई।

वर्षा के नाराज होने से पानी बरसना बंद हो गया। स्वार्थी मानव ने अपने पीने का जुगाड़ तो कर लिया, किन्तु बेचारे पशु–पशी प्यास के मारे तड़पने लगे। छोटे–छोटे फूल–पौधे, घास, लताएँ बिना पानी के मुरझाकर धीरे–धीरे दम तोड़ने लगे। जीव–जंतु प्यास के मारे जंगल में भटकते–भटकते मानव बस्तियों में पहुँचते तो मानव उनका वध कर देता। बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई।

अपनी प्रजा को परेशान देखकर जंगल के राजा शेर ने एक आपात बैठक बुलाई। राजा के आदेश पर सारी प्रजा एकत्र हो गई। राजा ने अपने मंत्री लोमड़ी को आदेश दिया– ''जाकर पता लगाओ, आखिर वर्षा क्यों नहीं हो रही है?''

लोमड़ी को पहले ही पता था, वह बोली– ''महाराज! मानव द्वारा जंगल काट देने से वर्षा नाराज हो गई है और सूरज से कहकर गई है कि अब वह धरती पर नहीं जाएगी। क्योंकि मनुष्य उसके द्वारा सींची गई धरती के पेड़–पौधों को काटकर उसके परिश्रम पर पानी फेर रहा है।''

शेर गुर्राया– ''अच्छा! ऐसी बात है, तब तो हम सबको मिलकर इस मानव को सबक सिखाना होगा।''

लोमड़ी बोली– ''महाराज! सबक तो हम सिखायेंगे, किन्तु पहले हमें वर्षा को मनाना होगा। नहीं तो हमारी प्रजा पानी के अभाव में.....।''

''हूँ..... तुम ठीक कहती हो। हमें किसी रणनीति के अन्तर्गत काम करना होगा। तुम बताओ ऋक्ष राज हमें क्या करना चाहिए?'' शेर ने भालू से पूछा।

''महाराज! मंत्री जी ठीक ही कह रहे हैं। हमें वर्षा को मनाना ही होगा और मेरी समझ से यह काम

मेंढक, झिंगुर और चातक अच्छी प्रकार से कर सकते हैं। झिंगुर सुबह–शाम अपने संगीत से, मेंढक अपने गीतों से वर्षा को रिझाएँ और चातक आसमान में जाकर दिनभर पानी–पानी पुकारे तो हो सकता है वर्षा का हृदय पिघल जाए।'' भालू ने उत्तर दिया।

लोमड़ी बोली– ''क्षमा चाहती हूँ महाराज! मेरी समझ से केवल वर्षा को रिझाने से काम नहीं बनेगा। क्योंकि वर्षा समुद्र में सोई हुई है। उसे उठाने का काम तो सूरज ही कर सकता है और सूरज को तो मोर ही प्रसन्न कर सकते हैं।''

''तुम भी कैसी बात करती हो? सूरज कैसे उठाएगा भला वर्षा को? एक आसमान में और दूसरा समुद्र में।'' राजा ने मंत्री को झिड़की दी।

''मंत्रीवर ठीक कह रहे हैं महाराज! वर्षा सूरज की बहिन है। सूरज की तपन से वर्षा उठकर भाप के

वेश में सागर से आसमान में आ जाती है और फिर बादल का रूप बना लेती है और खूब पानी बरसा कर सूरज की तपन दूर करके नदियों से होकर सागर में चले जाती है। इस तरह वर्षा सागर से आसमान, आसमान से धरती, धरती से समुद्र और समुद्र से फिर आसमान का चक्कर लगाती रहती है। वर्षा के इस प्रकार चक्कर लगाने को वर्षा का चक्कर (वर्षाचक्र) कहते हैं। यदि सूरज अपनी तपन बढ़ाए तो वर्षा जाग जाएगी, महाराज!'' ऋक्ष राज ने मंत्री का समर्थन किया।

''अच्छा! यह बात है, यह तो अच्छी बात है। जैसे वर्षा सूरज का ध्यान रखती है वैसे ही हमको भी एक दूसरे का ध्यान रखना चाहिए। खैर! सूरज को प्रसन्न करने का काम मोर करेंगे।''

गिलहरी जो अभी तक चुपचाप सबकी बातों को सुन रही थी। अचानक बोली– ''क्षमा महाराज! 'छोटे मुँह बड़ी बात', मैं भी कुछ कहना चाहती हूँ।''

''हाँ, हाँ! क्यों नहीं। इसीलिए तो यह बैठक बुलाई गई है। हमारा शासन पूरा लोकतान्त्रिक है। हर किसी को अपनी बात रखने का अधिकार है।'' शेर ने गिलहरी को अभयदान दिया।

गिलहरी– ''महाराज! हमारे पास व्यवस्था न होने के कारण हमारे कई साथी हमसे बिछुड़ गये हैं। वर्षा के क्रोधित होने का कारण मनुष्य की करतूत है और नुकसान हमें भुगतना पड़ रहा है।''

''तुम कहना क्या चाहती हो?'' शेर ने झिड़की दी।

''महाराज! हमें वर्षा को रोकने के लिए स्थान–स्थान पर तालाब और गड्ढे बनाने होंगे। ताकि वर्षा का जल उनमें एकत्र हो जाए और हम बाद तक उसका प्रयोग करते रहें। साथ ही हमें स्थान–स्थान से बीज लाकर जंगल में फैलाने होंगे, जिससे वर्षा के आने पर बीज उगकर चारों ओर हरियाली हो जाएगी और फिर वर्षा क्रोध भी नहीं करेगी। आखिर

हरियाली न होने से ही तो वर्षा नाराज हुई है न, मंत्री जी!''

लोमड़ी– ''बात तो गिलहरी की ठीक है महाराज!''

अचानक चूहा, खरगोश व नेवला खड़े होकर कहने लगे– ''धरती में बिल बनाने का काम तो हमें दे दीजिए। हम सारी धरती में इतने बिल बना देंगे कि, वर्षा की एक भी बूँद बेकार नहीं जाएगी। सारा पानी धरती के अंदर जाएगा। इस प्रकार भूमिगत जल का स्तर ऊपर उठ जाएगा और पानी की कमी नहीं होगी।''

अब तो हाथी, भालू और सुअर भी जोश में आकर कहने लगे– ''महाराज! धरती में गड्ढे और तालाब हम बनाएँगे। इनमें अटका पानी बहुत दिनों तक हमारे काम आएगा।''

सभी की बातें सुनकर राजा शेर प्रसन्न होकर बोला– ''शाब्बाश! अब आप सब लोग अपने–अपने काम में जुट जाओ और मैं स्वयं सारे जंगल की पहरेदारी करूँगा, ताकि कोई भी मानव एक भी पेड़ न काट सके।''

दूसरे ही दिन से सभी ने अपना काम प्रारंभ कर दिया। ज्योंहि सुबह सूरज लालिमा लेकर पर्वत के पीछे से आता, मोर अपने पंख फैलाकर उसका स्वागत करते। दिन का प्रथम प्रहर बीतते ही पपीहे आसमान में जाकर पानी–पानी की रटन लगाते। चूहा, खरगोश व नेवला धरती में बिल बनाने लगे। सुअर अपने तेज दातों से पहले जमीन खोदता और फिर अपने शरीर से मिट्टी को घिसट–घिसट कर चारों ओर फैलाकर तालाब बनाने लगा और भालू अपने नाखूनों से। शेर जंगल की चौकीदारी करने लगा।

देखते ही देखते मई समाप्त होकर जून का महीना आ गया, किन्तु वर्षा नहीं जागी। सूरज ने सोचा, सारे जीव परिश्रम कर रहे हैं। मुझे वर्षा को जगाना ही होगा। उसने सुबह से ही तपना प्रारंभ कर दिया। सूरज की तपन बढ़ने से वर्षा की नींद खुल गई और वह अँगड़ाई लेकर भाप के रूप में उठकर आसमान में जाने की तैयारी करने लगी।

इधर एक दिन शेर ने गश्त पर जाते समय मेंढक को बड़े पत्थर के नीचे आराम करते देखा तो वह क्रोधित होते हुए बोला– ''सब लोग अपना काम कर रहे हैं और तुम विश्राम कर रहे हो?''

मेंढक हाँफते हुए बोला– ''क्षमा महाराज! मैं कल से ही अपने पूरे कुटुम्ब के साथ 'मेघ मल्हार' राग गाना शुरू कर दूँगा।''

दूसरे ही दिन से मेंढक सुबह 'पौ' फटने से पहले ही 'मल्हार' गाने लगे। फिर मोरों ने सूरज का स्वागत करने को अपने पंख फैलाएँ तो भाप के वेश में आसमान में आई वर्षा ने सोचा मोर उसका स्वागत कर रहे हैं। वह प्रसन्न होकर बादल का वेश बनाकर हवा के साथ खेलते हुए आसमान को ढँकने लगी। आसमान में बादल छाया देखकर गिलहरियों का समूह प्रसन्न होकर बीजों को खोजने निकल पड़ा।

इधर दिन का प्रथम प्रहर बीतते ही मेंढकों ने फिर मल्हार राग अलापना प्रारंभ किया और झिंगुरों ने संगीत देना। मोर नाचने लगे और वर्षा प्रसन्न होकर रिम–झिम करती धरती की ओर आने लगी। धीरे–धीरे रिम–झिम फुहारों में बदल गई और फुहार बौछारों में। अत्यधिक वर्षा हुई। जानवरों द्वारा बनाए गए तालाब पानी से भर गए। वर्षा के चक्कर से जंगल में मंगल हो गया। अपनी मेहनत का रंग देखकर सारे जंतुओं की खुशी का ठिकाना न रहा और वे दौड़ते हुए अपने राजा के पास गए।

राजा ने सभी का स्वागत किया और बधाई देते हुए कहा– ''साथियों आप सभी की मेहनत रंग लाई है और मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है। किन्तु हमें इस मानव से सावधान रहना होगा।''

– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

योद्धा महर्षि परशुराम

– सुशील 'सरित'

विष्णु के दस अवतारों का संदर्भ हमारे पुराणों में वर्णित है। इन दस अवतारों में छठा अवतार भगवान परशुराम को माना जाता है। श्रीराम सातवें अवतार के रूप में वर्णित किये गये हैं। परशु नामक शस्त्र धारण करने के कारण ही ये परशुराम कहलाये। जमदग्नि के पुत्र होने के कारण इन्हें जामदग्न्य भी कहा जाता है। अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल तृतीया) को इनका जन्म हुआ था। इनकी जन्मभूमि आगरा के निकट (आगरा से लगभग १५ कि. मी. दूर) यमुना किनारे स्थित रुनकता मानी जाती है।

एक मान्यता के अनुसार इन्दौर के निकट चंबल के उद्गम स्थल जानापावा को भी इनकी जन्म स्थली माना गया है।

सामवेद एवं अथर्ववेद में उल्लेख है कि परशुराम के पिता ऋषि जमदग्नि का यमुना किनारे आश्रम था। जहाँ वह अपनी पत्नी रेणुका के साथ रहते थे। जमदग्नि के पाँच पुत्रों में परशुराम सबसे छोटे थे।

त्रेता युग के महान जननायकों में महर्षि परशुराम का नाम प्रख्यात धनुर्धर एवं तपस्वी के रूप में जाना जाता है। पौराणिक ऋषियों में दो ऐसे उदाहरण हैं जहाँ अपनी जाति धर्म के अतिरिक्त लक्षण उदित हुये। ऋषि विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय थे किन्तु उन्होंने ब्राह्मणोचित गुणों को अपना कर ब्रह्मर्षि की उपाधि प्राप्त की। दूसरी और महर्षि परशुराम जन्म से ब्राह्मण थे किन्तु उन्होंने क्षत्रियोचित गुणों को अपना कर क्षत्रियों का २१ बार विनाश कर धरा को क्षत्रिय विहीन किया।

परशुराम का नाम उनकी पितृभक्ति के लिये भी प्रसिद्ध है। परशुराम ने २१ बार पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन करने का निर्णय क्यों किया? इस संबंध में पौराणिक संदर्भों के अनुसार जमदग्नि ऋषि के आश्रम की गायों को परशुराम की अनुपस्थिति में राजा कीर्तवीर्य चुरा ले गये। इससे क्रुद्ध परशुराम ने राजा कीर्तवीर्य का वध कर डाला और बदले में कीर्तवीर्य के पुत्रों ने जमदग्नि का वध कर दिया। इसी से क्षुब्ध परशुराम ने क्षत्रिय जाति का विनाश का प्रण कर लिया था। आगरा के रुनकता क्षेत्र में यमुना किनारे परशुराम मंदिर आज भी उपस्थित है। यहाँ ऋषि जमदग्नि, रेणुका एवं परशुराम की स्थापित इन मूर्तियों में जमदग्नि एवं परशुराम की मूर्तियाँ कसौटी पत्थर की बनी हुई है। कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह जैसे महाभारत के प्रसिद्ध धनुर्धरों को धनुर्विद्या सिखाने वाले परशुराम ने (श्रीकृष्ण के बड़े भाई) बलदाऊ जी को भी यहीं पर धनुर्विद्या सिखायी थी।

गुजरात, गोआ और केरल की भूमि भी परशुराम जी के पराक्रम की कथा कहती है। पौराणिक मान्यतानुसार परशुराम जी के परशु के भय से समुद्र में डूबी यह धरती मनुष्यों के लिए प्राप्त हुई। परशुराम जी ने अपना परशु चलाया तो जहाँ तक वह गया समुद्र पीछे हटता गया। केरल प्रदेश वहीं बसा है। ऐसी भी किंवदन्ती है।

परशुराम शस्त्रविद्या के अत्यन्त निष्णात ऋषि थे। परशुराम साक्षात् शिव के शिष्य थे। हम भगवान गणपति को एकदंत कहते हैं ऐसी पुराण प्रसिद्धि है कि गणेश जी का एक दाँत परशुराम जी से युद्ध करते समय ही टूटा था। इसी टूटे हुए दाँत (हाथी दाँत) से कलम बनवाकर महर्षि वेदव्यास ने बोल-बोलकर गणेशजी से महाभारत लिखवाई थी।

महाभारत कालीन महायोद्धा भीष्म, द्रोण व कर्ण ने शास्त्र विद्या परशुराम जी से ही सीखी थी। केरल में आज भी प्रचलित युद्ध कलग कलरी पायट्टू की उत्तरी शैली वदक्कन कलरी के आदि गुरु परशुराम जी ही माने जाते हैं।

यूँ परशुराम को समर्पित आध्यात्मिक स्थलों में अरुणाचल प्रदेश में तेजू नगर से इक्सीस कि. मी. उत्तर पूर्व में स्थित परशुराम कुण्ड बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। मान्यता है कि इस कुण्ड का निर्माण स्वयं परशुराम ने अपने बाण से किया था। इसी कारण इसे पापमोचन कुंड की संज्ञा भी दी गई है। लोहित नदी के गहरे क्षेत्र में स्थित इस कुण्ड में डुबकी लगाकर सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। इस विश्वास से यहाँ लाखों लोग डुबकी लगाते हैं। अक्टूबर से अप्रैल तक इस स्थल का मौसम बड़ा ही सुहावना रहता है। सागर सतह से ३५०० मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह कुण्ड प्राकृतिक सौन्दर्य का खजाना है। उगते सूरज की धरती अरुणाचल प्रदेश का यह स्थल योगख्याम से ५६ कि. मी. दूर है और तिनसुखिया रेलवे स्टेशन से इसकी दूरी १२० कि. मी. है।

वर्ष में दो बार यहाँ विशाल उत्सव का आयोजन किया जाता है। १५ फरवरी को तामालाडू एवं १५ अप्रैल को सान्केन नामक उत्सव मनाते समय यहाँ लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ एकत्र होती है। निवास एवं भोजन की सामान्य सुविधाएँ यहाँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। कुंड के अतिरिक्त यहाँ एक प्राचीन भव्य मंदिर है जहाँ परशुराम जी की मूर्ति स्थापित की गई है।

– आगरा (उ. प्र.)

बाल पहेलियों का सही हल

उत्तर- १) अक्षर, २) पेन, ३) बस्ता, ४) अध्यापक, ५) दवात, ६) कॉपी, ७) किताब, ८) रबड़, ९) विद्यालय, १०) विद्या (पढ़ाई)।

माननीय गोपाल जी!

सादर नमस्कार

'देवपुत्र' का अप्रैल २०२४ का पीडीएफ देखा। यह मात्र पत्रिका नहीं भारतीय सभ्यता और संस्कृति की मोहक सुगंध बिखेरती सुंदर मंजूषा है जिसमें बच्चों की रुचियों के अनुरूप विविधतापूर्ण पुष्प सजे हैं। आज के समय में बच्चों को ऐसी पत्रिका उपलब्ध कराना बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस पत्रिका के माध्यम से बच्चे उन सभी गुणों को अपनाने में सक्षम होंगे जिन्हें देने का दायित्व उनके अभिभावकों और अध्यापकों का है। निश्चित रूप से 'देवपुत्र' बच्चों को संस्कारित करने की पाठशाला है और इसके लिए मैं सम्पादक मंडल के प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

– सुकीर्ति भटनागर, पटियाला (पंजाब)

होली के रंगों–सा महकता, 'देवपुत्र' का होली अंक

मुख पृष्ठ से लेकर अंत तक होली की एक से बढ़कर एक महकती कहानियों, गुदगुदाती व मनोरंजक कविताओं, चुटकलों तथा हास्य रस में डूबी कथाओं, चित्र कथाओं का रंग–बिरंगा गुलदस्ता है मार्च का यह अंक।

अपनी बात में बड़े भैया गोपाल जी ने होली में लाल, पीले, हरे, नीले रंगों की बात न करते हुए जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते तथा जीवन को अनमोल बनाते अन्य रंगों का भी उल्लेख किया। जैसे ममता का रंग, मित्रता का रंग, परिश्रम का रंग, सच का रंग, साहस का रंग, देशभक्ति का रंग आदि। सचमुच होली के साथ इस तरह की परिकल्पना से बड़े भैया अपने बच्चों को सहज ही प्रेरक सीख देंगे, ऐसा तो कभी मन में विचार नहीं आया।

'होली के संदेश' कहानी के माध्यम से विस्तृत रूप से होली मनाने के कारण तथा वैज्ञानिक व मनो वैज्ञानिक दृष्टि से होने वाले अनेक लाभ बताए गए हैं, डॉ. सेवा नंदवाल जी ने। ये निश्चित ही सबका ज्ञानवर्द्धन करेंगे।

'रसोई घर में मनी होली' (डॉ. शील कौशिक) रंग–बिरंगी सब्जियों के होली खेलने की मनोरंजन कथा है, तो दामोदर अग्रवाल जी की कहानी 'मार्च का बुखार' में परीक्षा के डर से उत्पन्न शारीरिक व मानसिक कष्टों की बात की गई है। बिजली गुल हो जाने पर उनकी कविता 'बड़े शर्म की बात' बहुत ही रोचक है।

होली केवल भारत में ही नहीं मनाई जाती बल्कि विदेशों में भी मनाई जाती है। राजकुमार राजन जैन द्वारा इस पर विस्तृत आलेख प्रस्तुत हुआ है। गाँव की होली निश्चित तौर पर शहर की होली से अच्छी होती है। यहाँ घरेलू नुस्खे से छोटी–मोटी बीमारियों का उपचार सहज ही मिल जाता है। यह सबक मिलता है 'दादी का दवाखाना' से।

गुरुदीन सिंह 'दीन' के बारे में दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' द्वारा प्रस्तुत रेखाचित्र इस पत्रिका की विशिष्ट रचना कही जा सकती हैं। 'कवि बौडम हास्य सम्मेलन' अरविंद कुमार साहू की रचना सचमुच हँसा–हँसा कर लोटपोट कर देगी। किन्तु इसका बड़ा आकार बच्चों के लिए पढ़ने के लिए शायद अधिक लगे।

'सच्चे बालवीर' के तहत रजनीकांत शुक्ल की 'कुएँ की चीखें' रचना वास्तव में प्रेरक है।

२२ मार्च विश्व जल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर रामगोपाल राही जी की रचना 'पानी की आत्मकथा' उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त विभिन्न जीव–जंतुओं से सजी 'रंगमंच का जादूगर' कहानी भी हमारा ध्यान आकर्षित करती है।

रामकुमार गुप्त, चक्रधर शुक्ल, डॉ. परशुराम शुक्ल, राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव की कविताएँ प्रभावित करती हैं।

पत्रिका के अंत में आपकी पाती के अंतर्गत सुकीर्ति भटनागर, डॉ. नागेश पांडेय 'संजय', डॉ. फकीरचंद शुक्ला, प्रकाश तातेड़, डॉ. विमला भंडारी, प्रकाश मनु, नीलम राकेश, डॉ. शील कौशिक, पद्मा चौगांवकर आदि साहित्यकारों की प्रतिक्रियाएँ सहज ही पत्रिका के पिछले अंक के नवाचार व उत्कृष्टता पर मोहर लगाती हैं। क्या ही अच्छा हो यदि इस पत्रिका में बच्चों की मनभावन प्रतिक्रियाएँ भी शामिल हों।

सारांशत: सुरुचिपूर्ण व रोचक, मनोरंजन से भरपूर, सार्थक चित्रों से सुसज्जित विशेषांक के लिए संपादक महोदय एवं उनकी टीम बधाई के पात्र हैं।

– डॉ. शील कौशिक,
सिरसा (हरियाणा)

पुस्तक परिचय

मीकू ओझा

मूल्य- १८५/-

प्रकाशक-इण्डिया नेट बुक प्राईवेट लिमिटेड, सी-१२२, सेक्टर-१९, नोएडा-२०१३०१ (गौतमबुद्ध नगर)

ख्यात लेखक श्री टीकम चन्दर ढोडरिया द्वारा बच्चों के लिए लिखी प्रेरक, बोधक एवं मनोरंजक १७ बाल कहानियों की रोचक पुस्तक।

जादुई पिटारा

मूल्य- १८५/-

प्रकाशक-इण्डिया नेट बुक प्राइवेट लिमिटेड, सी-१२२, सेक्टर-१९, नोएडा-२०१३०१ (गौतमबुद्ध नगर)

विख्यात लेखिका विमला नागला द्वारा लिखित १६ बाल कहानियाँ जो आपकी सुरुचि एवं सुबोध को बढ़ाएँगी, मनोरंजन भी करेंगी।

फूलने का जादू

मूल्य- १६५/-

प्रकाशक-इण्डिया नेट बुक प्राईवेट लिमिटेड, सी-१२२, सेक्टर-१९, नोएडा-२०१३०१ (गौतमबुद्ध नगर)

वरिष्ठ बाल साहित्यकार उषा सोमानी की कलम से जन्मी बच्चों की मनभावन, शिक्षा व मनोरंजन भरी १६ बाल कहानियाँ।

पक्षियों को पहचानें

मूल्य- २००/-

प्रकाशक-साहित्यागार, धामाजी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)

प्रसिद्ध लेखिका श्यामा शर्मा द्वारा २३ पक्षियों के रोचक संसार की सैर कराती, जानकारी परक ज्ञानवर्द्धक पुस्तक।

किताबों के पंख

मूल्य- १००/-

प्रकाशक-नवरंग पब्लिकेशन, ग्रा. चक अमृतसरिया, पटरन रोड, समाना (पंजाब)

प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ. दर्शनसिंह आशट बहुरंगी चित्र एवं पृष्ठ सज्जा से सँवरी ५ बाल कहानियाँ जो आपको सीख भरा मनोरंजन देंगी।

पृथ्वी कितनी प्यारी है

मूल्य- १६०/-

प्रकाशक-अद्विक पब्लिकेशन, ४१, हसनपुर, आईजी. एक्सटेंशन पटपड़गंज, दिल्ली-११००९२

सुविख्यात लेखक श्री राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा लिखी प्रकृति, पर्यावरण, परिवेश, परिवार विषयों पर कल्पना के साथ यथार्थ अनुभूति एवं तथ्यपरक जानकारी देती ५१ बाल कविताएँ।

कविता

भीषण गर्मी के दिन आये

– आचार्य भगवत दुबे

भीषण गर्मी के दिन आये
लम्बी छुट्टी लेकर आये

अब दिन आये हैं मस्ती के
बच्चे खेल रहे बस्ती के

माँ घर के भीतर खींचे
हम भागे बरगद के नीचे

घर में रहना नहीं सुहाता
हमको, सदा खेलना भाता

माँ आमों का पना बनाती
नीबू–शरबत छाँछ पिलाती

बब्बा खोले अपना डब्बा
हमें खिलाते रोज मुरब्बा

बेल, आँवला के गुण गाते
पके आम तरबूज खिलाते

कहते आम फलों का राजा
हमको रखे आमरस ताजा

मीठी लस्सी हमें सुहाती
लीची हमें बहुत ललचाती

समझाती है हमको नानी
घर से निकलो पीकर पानी

– जबलपुर (म. प्र.)

देवपुत्र द्वारा वर्ष २०२३ के लिए आयोजित

प्रतियोगिता परिणाम घोषित

देवपुत्र बाल मासिक द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं (वर्ष २०२३) के परिणाम इस प्रकार हैं–

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२३

विषय – बाल उपन्यास — पुरस्कार ५०००/–

पुरस्कृत– कंजूस गोन्तालू लेखक– डॉ. राकेशचक्र मुरादाबाद (उ. प्र.)

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२३

विषय– छत्रपति शिवाजी के जीवन प्रसंग पर केन्द्रित एकांकी।

प्रथम–	डॉ. अनिल वाजपेयी, मथुरा (उ. प्र.)	पुरस्कार	१५००/–
द्वितीय–	सौ. पद्मा चौगांवकर, गंज बासौदा (म. प्र.)	पुरस्कार	१२००/–
तृतीय–	श्रीमती कुसुम अग्रवाल, कांकरौली (राज.)	पुरस्कार	१०००/–
प्रोत्साहन–	डॉ. सुधा जगदीश गुप्ता 'अमृता' कटनी (म. प्र.)	पुरस्कार	५००/–
प्रोत्साहन–	डॉ. इन्दु गुप्ता, फरीदाबाद (हरियाणा)	पुरस्कार	५००/–

केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२३

चयनित कृति– शौर्य प्रधान नाटक, लेखक– श्री उमेश कुमार चौरसिया, अजमेर (राज.)

पुरस्कार– २१००/–

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२३

प्रथम–	श्री निलय भारद्वाज, आसनसोल (प. बं.)	पुरस्कार	१५००/–
द्वितीय–	कु. मानसी अग्रवाल, बैंगलूरू (कर्नाटक)	पुरस्कार	११००/–
तृतीय–	कु. निष्णा बनर्जी, नागपुर (महाराष्ट्र)	पुरस्कार	१०००/–
प्रोत्साहन–	श्री अक्षित जैन, जयपुर (राज.)	पुरस्कार	५००/–
	कु. हार्षिका कुमारी, देवधर (झारखंड)	पुरस्कार	५००/–

सभी विजेताओं को देवपुत्र की ओर से हार्दिक बधाई।

रवि लायटू का विस्मयकारी भारत

तमिलनाडु में रामेश्वरम के रामानाथस्वामी मन्दिर का गलियारा देश भर के समस्त मन्दिरों में सबसे बड़ा है जिसकी लम्बाई 1220 मी. है और इसमें यद्यपि 1212 खम्बे हैं पर यह 'हज़ार खम्बों वाले गलियारे' के नाम से ही विख्यात है।

जबलपुर, महाबलीपुरम और मेघालय के मावलीन्नोंनी गांव में यह चट्टानें आश्चर्य जनक रूप से संतुलन में हैं।

चेन्नई, तमिलनाडु से उर्दू में प्रकाशित होने वाला 'द मुसलमान' विश्व का ऐसा अकेला सांध्य समाचारपत्र है जिसके सारे चारों पेज आज भी हाथ से ही लिखे जाते हैं। सन 1927 से बिना नागा लगातार रोज़ पाठकों तक पहुंचने वाले इस पत्र के मालिक हैं सैयद अज़मातुल्ला। 25,000 के करीब ग्राहकों वाले इस अखबार की कीमत है महज 0.75 पैसे जबकि इसके संवाददाता पूरे भारत में फैले हुए हैं।

प. बंगाल के मुर्शिदाबाद में नवाब नाज़िम हुमायुंज़ेह द्वारा बनवाये गए तीन मंज़िले हज़ारद्वारी महल में (जिसके वास्तुकार थे डंकन मैक्लौड) वैसे तो इसके नाम के अनुसार एक हज़ार दरवाज़े नज़र आते हैं पर वास्तविकता यह है कि इनमें से असली केवल सौ ही हैं बाकी के नौ सौ पूरीतरह पत्थर पर कलाकारी का अनूठा नमूना भर हैं जिसकी वजह से ये देखने में असली होने का केवल भ्रम उत्पन्न करते हैं।

दुनिया में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित डाकघर लाहौल-स्पीति (हि.प्रदेश) ज़िले के हिक्किम गांव में है जिसकी ऊंचाई है 4,440 मीटर।

© gyahm@gmail.com/ 0 8077554501

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०४/२०२४ | प्रेषण तिथि ३०/०४/२०२४ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

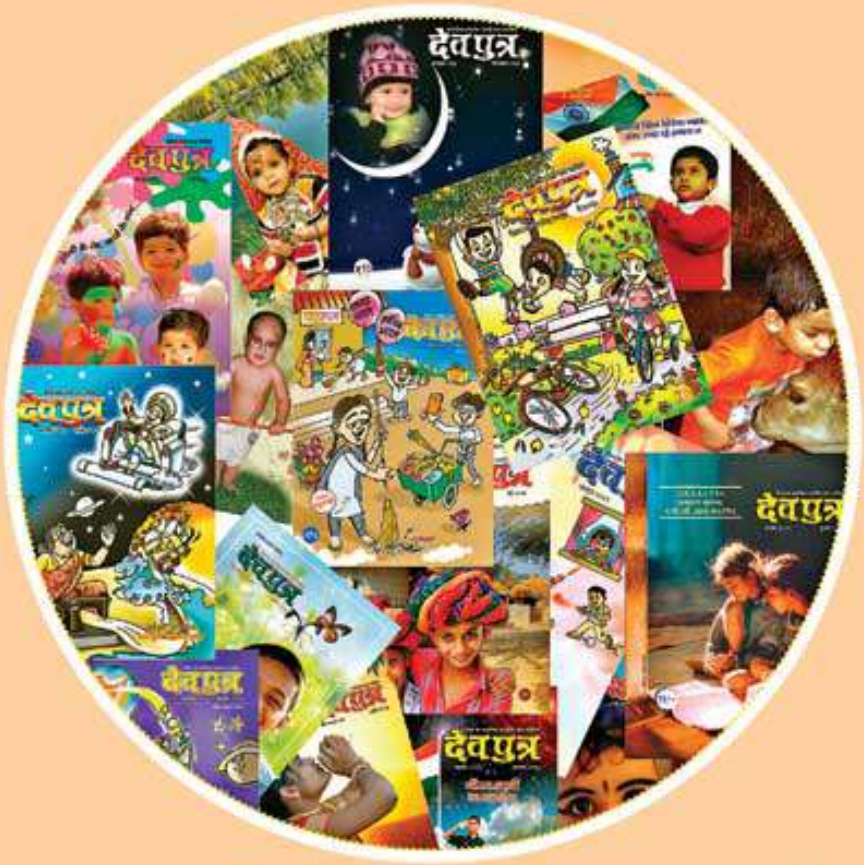

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना